सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" बिना प्रयास किए आप सिर्फ नीचे गिर सकते हैं ऊपर नहीं उठ सकते, यह गुरुत्वाकर्षण का नियम भी है और जीवन का भी ...!!
अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–196 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, मंगलवार 04 अगस्त 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

रिलायंस ज्वेलर्स में 17.50 लाख की सोने की हेराफेरी का खुलासा

पूर्व कर्मचारी गिरफ्तार, 80 ग्राम सोना और फर्जी बिल बरामद

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर।

रायपुर के गोलबाजार स्थित रिलायंस ज्वेलर्स के स्टोर से लाखों रुपये के सोने के आभूषणों की सुनियोजित हेराफेरी का मामला सामने आया है। पुलिस ने स्टोर के पूर्व कमर्चारी मनोज यादव को गिरफ्तार कर उसके पास से लगभग 80 ग्राम सोने के आभूषण बरामद किए हैं, जिनकी अनुमानित कीमत 14.50 लाख है।

स्टोर मैनेजर की शिकायत पर थाना गोलबाजार में अपराध क्रमांक 116/2026, धारा 316(4) के तहत अपराध दर्ज किया गया था। शिकायत में बताया गया था कि स्टोर में रखे 103.832 ग्राम वजन के तीन सेट, 5 नग 22 कैरेट सोने के कंगनों के स्थान पर समान वजन और डिजाइन के नकली कंगन रख दिए गए थे। इससे कंपनी को लगभग 17.50 लाख की आर्थिक क्षति हुई।

डीसीपी सेंट्रल जोन तारकेश्वर पटेल के निर्देश पर एडिशनल एसपी अमित कोसमा और टीआई स्वराज त्रिपाठी के नेतृत्व में जांच की गई। पूछताछ में आरोपी मनोज यादव ने बताया कि वह 2017 से रिलायंस ज्वेलर्स में काम कर रहा था और कंपनी की कार्यप्रणाली से अच्छी तरह वाकिफ था।

जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी ने किश्तों पर सोना खरीदने वाली *दो महिला ग्राहकों* के साथ भी ठगी की। उनसे पैसे लेकर फर्जी बिलों के जरिए आभूषण दिए। रिलायंस ज्वेलर्स से सत्यापन पर बिल फर्जी पाए गए। इसके बाद प्रकरण में धारा 336(3), 318(4), 338, 340(2) की बढ़ोतरी की गई।

तकनीकी जांच में पता चला कि आरोपी अपने मोबाइल पर *अक और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म* से पुलिस जांच, गिरफ्तारी और जमानत की प्रक्रिया के बारे में जानकारी ले रहा था।

आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने एक रेडमी मोबाइल और लगभग 80 ग्राम सोने के आभूषण जब्त किए। पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर मनोज यादव को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे *न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है। पुलिस ने बताया कि प्रकरण में आरोपी के अन्य लेन-देन और संभावित पीड़ितों की भी जांच की जा रही है।

छत्तीसगढ़ शराब घोटाला मामले में ED ने बढ़ाया जांच का दायरा, सचिवालय के पूर्व अफसरों से पूछताछ

राज्य ACB-EOW की जांच की प्रगति पर भी उठे सवाल, सियासी गलियारों में हलचल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में कथित शराब घोटाले की जांच अब नए मोड़ पर पहुंच गई है। सूत्रों के अनुसार जुलाई के अंतिम सप्ताह में प्रवर्तन निदेशालय ईडी ने इस मामले में जांच का दायरा व्यापक करते हुए मुख्यमंत्री सचिवालय से जुड़े रहे कई वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों, मुख्य सचिव स्तर के पूर्व अधिकारियों और शीर्ष नौकरशाहों से घंटों पूछताछ की।

ईडी ने आधिकारिक तौर पर पूछताछ के निष्कर्ष या किसी संभावित कार्रवाई की पुष्टि नहीं की है, लेकिन जांच की बढ़ती रफ्तार ने राजनीतिक और प्रशासनिक गलियारों में हलचल बढ़ा दी है। सूत्रों का दावा है कि पूछताछ के लिए पहुंचे कुछ वरिष्ठ अधिकारी सरकारी वाहनों के बजाय निजी वाहनों का इस्तेमाल करते देखे गए। हालांकि इसकी स्वतंत्र आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

जांच के दायरे में क्या-क्या

जांच एजेंसियों के आरोपों के अनुसार इस मामले में आबकारी नीति में बदलाव, लाइसेंस व्यवस्था में कथित फेरबदल, नकली लेबलिंग और शराब सिंडिकेट को कथित लाभ पहुंचाने जैसे पहलू शामिल हैं। आरोप है कि इन अनियमितताओं से सरकारी राजस्व को भारी नुकसान हुआ।

ईडी पहले भी इस मामले में कथित अवैध लेनदेन और संपत्तियों पर कार्रवाई कर चुकी है। अब एजेंसी दस्तावेजों, डिजिटल साक्ष्यों और अलग-अलग बयानों का मिलान कर रही है ताकि जांच को अगले चरण तक ले जाया जा सके।

राज्य एजेंसियों की जांच कहां?

इसी मामले की जांच राज्य स्तर पर ACB और EOW के पास भी है। लेकिन अब सवाल उठ रहा है कि उस जांच की प्रगति क्या है? कई साल बीत जाने के बाद भी राज्य एजेंसियों की जांच की रफ्तार को लेकर विपक्ष और आम जनता सवाल उठा रही है। सवाल है कि ACB-EOW ने अब तक कितने लोगों से पूछताछ की, कौन-कौन से निष्कर्ष सामने आए और जांच किस चरण में है। एक तरफ एऊनए दस्तावेजों के आधार पर दायरा बढ़ा रही है, दूसरी तरफ राज्य एजेंसियों की धीमी प्रगति को लेकर चर्चा है।

सियासी पृष्ठभूमि

छत्तीसगढ़ में सत्ता परिवर्तन के समय कथित शराब घोटाला सबसे बड़ा राजनीतिक मुद्दा था। भाजपा ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति और निष्पक्ष कार्रवाई का वादा किया था। अब जब केंद्रीय एजेंसी की जांच आगे बढ़ रही है, तो लोगों की निगाहें इस पर हैं कि प्रक्रिया किस दिशा में जाती है। कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि पूछताछ होना किसी व्यक्ति के दोषी होने का प्रमाण नहीं है। अंतिम निष्कर्ष जांच और न्यायिक प्रक्रिया से ही तय होंगे।

जनता पूछ रही – परिणाम कब?

इस पूरे घटनाक्रम ने भ्रष्टाचार, जवाबदेही और प्रशासनिक पारदशिर्ता पर बहस छेड़ दी है। जनता सिर्फ जांच शुरू होने की खबर नहीं, बल्कि जांच के निष्कर्ष और परिणाम चाहती है। फिलहाल एऊकी जांच पर सबकी नजर है।

तीन राज्यों में हुए उप-चुनाव के आए परिणाम

बिहार में जन सुराज का धमाका MP में कांग्रेस बरकरार, गुजरात में भाजपा का दबदबा कायम

बांकीपुर में भाजपा-राजद दोनों से ज्यादा वोट लाकर प्रशांत किशोर ने रचा इतिहास

नई दृष्टिबिंदु / नई दिल्ली

30 जुलाई को बिहार, मध्य प्रदेश और गुजरात की तीन विधानसभा सीटों पर हुए उप-चुनावों के नतीजों ने साफ कर दिया कि यह सिर्फ तीन सीटों की हार-जीत नहीं, बल्कि तीनों राज्यों में बदलती सियासी हवा का रिपोर्ट कार्ड है। एक तरफ गुजरात में भाजपा का किला मजबूत दिखा, वहीं मध्य प्रदेश में अंदरूनी असंतोष भारी पड़ा। सबसे बड़ा झटका और संदेश बिहार से आया, जहां भाजपा के गढ़ में जन सुराज ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की।

बिहार – बांकीपुर: जन सुराज ने तोड़ा भाजपा का किला

पटना की प्रतिष्ठित बांकीपुर सीट पर जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बड़ी जीत हासिल की है। यह सीट भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन का 5 बार का गढ़ रही है। **वोट गणित:** प्रशांत किशोर को 64,151 वोट (49.23%) मिले। भाजपा के नीरज कुमार सिन्हा को 44,827 वोट (34.40%) मिले। प्रशांत किशोर ने 19,324 वोटों के भारी अंतर से जीत दर्ज की।

राजद की रेखा कुमारी तीसरे स्थान पर 14,273 वोट (10.95%) के साथ रहीं। दिलचस्प बात यह रही कि भाजपा और राजद के कुल वोट 59,100 भी प्रशांत किशोर के अकेले वोटों से 5,051 कम रहे। कुल 1,30,313 वोटों में से हर दूसरा मतदाता जन सुराज के साथ दिखा। ठडळअ को 646 वोट मिले।

यह नतीजा पारंपरिक भाजपा-राजद की राजनीति से इतर एक नए विकल्प के उभार का संकेत माना जा रहा है।

मध्य प्रदेश – दतिया: प्रयोग पड़ा भारी, कांग्रेस ने बचाई सीट

दतिया में कांग्रेस विधायक राजेंद्र भारती की सदस्यता रद्द होने के बाद हुए उप-चुनाव में कांग्रेस के घनश्याम सिंह ने 6,016 वोटों से जीत दर्ज कर सीट बरकरार रखी। भाजपा ने यहां पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा का टिकट काटकर आशुतोष तिवारी को मैदान में उतारा था। लेकिन यह रणनीतिक बदलाव पार्टी के पक्ष में नहीं गया। भाजपा प्रत्याशी अपने ही वरिष्ठ नेता के गृह बूथ पर भी बढ़त नहीं बना पाए। स्थानीय असंतोष का सीधा फायदा कांग्रेस को मिला।

गुजरात – मांजलपुरा: भाजपा का अभेद्य किला

गुजरात के मांजलपुरा में भाजपा का दबदबा बरकरार रहा। वरिष्ठ नेता योगेश पटेल के निधन से खाली हुई सीट पर भाजपा के सतीश पटेल ने कांग्रेस के भीखाभाई रबारी को 30,630 वोटों के बड़े अंतर से हराया। गुजरात में पार्टी के मजबूत सांगठनिक ढांचे के दम पर यह सीट एकतरफा रही। तीनों नतीजों का सार यही है – *गुजरात में भाजपा का संगठन अभेद्य, टढ में टिकट प्रयोग और असंतोष नुकसानदेह, और बिहार में जनता ने पारंपरिक दलों से अलग हटकर नए विकल्प को हाथों-हाथ लिया। बांकीपुर का परिणाम 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव से पहले विपक्षी राजनीति और भाजपा के लिए सबसे बड़ा टेकअवे माना जा रहा है।

त्वरित टिप्पणी

बांकीपुर-दतिया : अहंकार के किले ढहा गई जनता की चेतना

"कुत्ता-बिल्ली" वाले बयान से लेकर बूथ तक की हार तक-सत्ता के सेट फॉर्मूले फेल

आलोक तिवारी/ नई दिल्ली।

जॉन स्टुअर्ट मिल ने सही कहा था – "लोकतंत्र की सेहत शासकों की ताकत से नहीं, जनता की चेतना से तय होती है।" बिहार के बांकीपुर और मध्य प्रदेश के दतिया के उपचुनाव नतीजों ने इस चेतना का सबसे उग्र रूप दिखा दिया है। ये हार-जीत के आंकड़े नहीं हैं। ये सत्ता के गलियारों में गूंजा हुआ जनता का वो थप्पड़ है जो अहंकार की नींव हिला देता है।

बांकीपुर: बीजेपी के "अभेद्य किले" का पतन

1995 से बीजेपी का किला रहा बांकीपुर, जहाँ से नितिन नवीन 5 बार जीते। नितिन नवीन के राज्यसभा जाने से सीट खाली हुई तो बीजेपी के नेताओं को नशा चढ़ गया। मंचों से ऐलान हुआ – "बांकीपुर में कुत्ता-बिल्ली भी खड़ा कर दो, जीत जाएगा।"

जनता ने जवाब एश्ट से दिया

नतीजा: जन सुराज के प्रशांत किशोर 63,203 वोट, बीजेपी के नीरज सिंह 39,794 वोट। 18,953 वोटों की ऐतिहासिक बढ़त।

हार की पटकथा बीजेपी ने खुद लिखी

***पहला दांव फेल** : पहले आशीष बंटी को टिकट। नामांकन के बाद पता चला माता-पिता चारा घोटाले में जेल काट चुके। आनन-फानन में नाम वापस। **दूसरा दांव कमजोर** : फिर बूथ अध्यक्ष से उठे नीरज सिंह को मौका। वफादारी ठीक, पर जननेतृत्व का करिश्मा नदारद। **जनादेश का अपमान** : 2025 में बिहार ने नीतीश कुमार को उट के लिए वोट दिया। दिल्ली में समीकरण बदले और सम्राट चौधरी * उट बन गए – जिन पर हत्या के मामले हैं। प्रशांत किशोर ने यही सवाल घर-घर पहुंचाया। **कैडर नाराज** : भारत तिवारी एनकाउंटर से सवर्ण नाराज, छात्र रेप केस लटका, जंतर-मंतर का छात्र आंदोलन। बांकीपुर कोचिंग हब है। पढ़े-लिखे युवाओं ने गुस्सा वोट में बदला।*

राजनीतिक समीकरण भी पलटे। तेज प्रताप यादव ने फखऊप्रत्याशी का नामांकन रद्द कराकर प्रशांत किशोर को समर्थन दिया। तेजस्वी आखिरी 3 दिन में आए, तब तक देर हो चुकी थी। फखऊकैडर + मुस्लिम + कांग्रेस का मौन समर्थन सब जन सुराज में शिफ्ट।

दतिया: अनुशासन का किला भी ढहा

मध्य प्रदेश में दतिया नरोत्तम मिश्रा का गढ़। सब जानते थे वे चुनाव लड़ेंगे। लेकिन दिल्ली के "आकाओं" ने आशुतोष तिवारी को थोप दिया। नरोत्तम मिश्रा के समथकों ने चक्काजाम किया, गुस्सा फूटा।

नतीजा: कांग्रेस के घनश्याम सिंह 6,016 वोटों से जीते

सबसे शमर्नाक? नितिन नवीन अपने बूथ पर हारे। नरोत्तम मिश्रा अपने बूथ पर हारे। शेक्सपियर का वाक्य याद आ गया – "अहंकार वो दीमक है जो सबसे बड़े साम्राज्य को खोखला कर देती है।"

3 नए तथ्य जो नतीजों को और गहरा करते हैं

***शहरी आक्रोश का विस्फोट:** बांकीपुर पटना का "कोचिंग कैपिटल" है। यहाँ 2 लाख से ज्यादा छात्र। छात्र आंदोलन, बेरोजगारी और पेपर लीक के मुद्दे पर शहरी मध्यम वर्ग पहली बार संगठित होकर सत्ता के खिलाफ खड़ा हुआ। ये ग्रामीण नाराजगी नहीं, शहरी बगावत है। **प्रशांत किशोर का मॉडल:** 2014 में मोदी के रणनीतिकार रहे ढङ ने 2024 में पार्टी बनाई, 2025 में जीरो सीट। लेकिन 2026 में सीधे मैदान में उतरकर साबित किया – रणनीति से नहीं, जनसंपर्क से जीत होती है। उन्होंने 6 महीने तक पदयात्रा कर हर गली में "जनादेश के अपमान" की बात पहुंचाई। **बीजेपी का कैडर संकट:** दतिया और बांकीपुर दोनों जगह बूथ स्तर का कार्यकर्ता मायूस। जब जमीनी कार्यकर्ता को टिकट न देकर "आयातित" चेहरे थोपे जाएंगे तो बूथ पर ही विरोध होगा। ये नतीजे बीजेपी के लिए चेतावनी हैं तो विपक्ष के लिए अवसर। शेक्सपियर के बाद खढ का 1977 याद कीजिए। जब इंदिरा गांधी के सामने पूरा विपक्ष एक हुआ था। आज मोदी ब्रांड से टक्कर लेनी है तो "अहंकार छोड़ एकजुटता" ही रास्ता है। **बांकीपुर और दतिया ने साबित कर दिया** – न कोई गढ़ अमर है, न कोई नेता अजेय। जब जनता जागती है तो ताश के पत्तों की तरह सत्ता ढह जाती है। **सत्ता को अब समझना होगा** – मतदाता आपकी जेब का बंधुआ वोट बैंक नहीं है। वो मालिक है। और मालिक जब हिसाब मांगता है, तो सिंहासन हिलते हैं।*

9 महीने में जीरो से हीरो : प्रशांत किशोर ने बांकीपुर जीतकर हिला दी दिल्ली की सत्ता

नितिन नवीन की परंपरागत सीट 19 हजार वोटों से जीती, जन सुराज का डंका

नई दृष्टिबिंदु / पटना।

बिहार की राजनीति में 9 महीने पहले जिसे "खत्म" मान लिया गया था, उसने आज बीजेपी के सबसे बड़े किले को ध्वस्त कर दिया। जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने बांकीपुर उपचुनाव में 19,000+ वोटों के अंतर से ऐतिहासिक जीत दर्ज कर पूरे देश में अपना सियासी कमबैक कर लिया है।

नवंबर 2025– जीरो... अगस्त 2026– हीरो

14 नवंबर 2025 को बिहार विधानसभा चुनाव में प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने 238 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। नतीजा? 236 सीटों पर जमानत जब्त। लगा था पीके की सियासत खत्म। लेकिन 9 महीने बाद तस्वीर बदल गई। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष *नितिन नवीन की पारंपरिक सीट बांकीपुर – जो 1995 से बीजेपी कभी नहीं हारी – वहां प्रशांत किशोर ने सीधे चुनाव लड़कर 63,203 वोट हासिल किए और बीजेपी को 39,794 पर रोक दिया।

कमबैक की कहानी : त्याग, तपस्या और जमीनी लड़ाई

1. **20 नवंबर 2025:** पश्चिम चंपारन के भितिहरवा आश्रम में 1 दिन का मौन व्रत। इसे आत्ममंथन की शुरुआत माना गया। 2. 8 फरवरी 202– 'बिहार नवनिर्माण यात्रा' की शुरुआत। गांव-गांव जाकर जनसंवाद। 3. सबकुछ दान: ऐलान किया – अगले 5 साल की कमाई का 90% जन सुराज को दान। दिल्ली का घर छोड़, 20 साल की कमाई की हर संपत्ति पार्टी को। कार्यकर्ताओं से 1000-1000 रु. का सहयोग मांगा। 4. आश्रम में शिफ्ट: पटना का शेखपुरा बंगला छोड़ा। बिहार नवनिर्माण आश्रम में रहने लगे। 5 एकड़ में बने इस आश्रम में 300+ जन सुराज कार्यकर्ता रहते हैं। अगले विधानसभा चुनाव तक यहीं से काम करेंगे।

रणनीति बदली, नतीजा बदला

2025 में पीके सिर्फ "मार्गदर्शक" और "स्टार प्रचारक" थे। चारों तरफ प्रोफेशनल्स का घेरा था। 2026 में खुद मैदान में उतरे। प्रोफेशनल्स को पीछे किया और कार्यकर्ताओं को आगे।

जनसभाओं में एक ही नारा गूंजा – "राइट पीपल, राइट थिंकिंग" यानी सही लोग, सही सोच।

बड़ा संदेश

बांकीपुर में बीजेपी को हराना आसान नहीं था। यहां बीजेपी को हमेशा 50%+ वोट मिलते रहे। प्रशांत किशोर की जीत ने साफ संदेश दे दिया – जनता अब अहंकार और सेट फॉर्मूले नहीं, जमीनी काम और ईमानदारी चाहती है। बिहार से उठी ये लहर अब दिल्ली तक गूंज रही है।

युवा नशे से मुक्त रहेंगे तो देश और समाज भी सशक्त एवं स्वस्थ बनेगा- मंत्री गजेन्द्र यादव

जिला स्तरीय कार्यक्रम का रूंगटा डेंटल कॉलेज भिलाई में आयोजन, कलेक्टर अभिजीत सिंह ने दिलाई नशा मुक्ति की शपथ

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय तथा माय भारत के संयुक्त तत्वावधान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत संकल्प अभियान का राष्ट्रीय शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सीधा प्रसारण किया गया। अभियान के अंतर्गत जिला स्तरीय कार्यक्रम रूंगटा डेंटल कॉलेज, सुपेला, भिलाई में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव थे। कार्यक्रम का उद्देश्य राज्य के अधिक से अधिक शैक्षणिक संस्थानों, युवा संगठनों, औद्योगिक संगठनों तथा सामाजिक एवं आध्यात्मिक संस्थाओं को अभियान से जोड़ते हुए इसे व्यापक जनभागीदारी का आंदोलन बनाना है, ताकि अधिक से अधिक युवा नशामुक्त भारत के संकल्प से जुड़ सकें। इस अवसर पर कलेक्टर श्री अभिजीत सिंह ने विकसित भारत के निर्माण के लिए नशे से दूर रहने का सामूहिक संकल्प दिलाया।

स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत संकल्प अभियान के तहत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज देश की लगभग 29 करोड़ जनता को संबोधित किया। नशा भले ही छोटा शब्द है, लेकिन यह अनेक लोगों का जीवन बर्बाद कर देता है। एक बार नशे की लत लग जाने के बाद उसे छोड़ना कठिन हो जाता है और व्यक्ति का जीवन धीरे-धीरे असंतुलित होने लगता है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे नशे से दूर रहें और नशे का सेवन न करने का दृढ़ संकल्प लें। साथ ही यह भी संकल्प करें कि न तो वे स्वयं नशा करेंगे और न ही दूसरों को इसके सेवन के लिए प्रेरित होने देंगे। उन्होंने कहा कि नशे के कई प्रकार हैं और अत्यधिक मोबाइल का उपयोग भी एक प्रकार की लत है। युवा

यदि नशे से मुक्त रहेंगे तो समाज और देश भी सशक्त एवं स्वस्थ बनेगा। कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं एवं प्रतिभागियों ने नशामुक्त भारत के निर्माण में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने तथा समाज को नशे के दुष्प्रभावों से मुक्त बनाने का सामूहिक संकल्प लिया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कलेक्टर अभिजीत सिंह ने कहा कि आज इस महाअभियान की शुरुआत हो रही है। भारत युवाओं का देश है और नशे की बढ़ती प्रवृत्ति समाज के समक्ष एक गंभीर चुनौती है। नशे के कारण अनेक प्रकार की अप्रिय घटनाएं घटित होती हैं। युवाओं को नशे के जाल में फंसने के बजाय अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाना चाहिए। उन्होंने बताया कि यह अभियान आगामी 100 सप्ताह तक प्रत्येक रविवार को सतत रूप से संचालित किया जाएगा। कलेक्टर श्री सिंह ने युवाओं से संकल्प लेने का आह्वान किया कि वे स्वयं नशा नहीं करेंगे और अपने आसपास के लोगों, दोस्तों तथा पड़ोसियों को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करेंगे। कलेक्टर ने बताया कि जिले में नशामुक्ति के लिए केंद्र संचालित किए जा रहे हैं। युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी देने एवं परामर्श उपलब्ध कराने के लिए आउटरीच ड्रॉप-इन सेंटर का संचालन किया जा रहा है। इसके माध्यम से अब तक लगभग 2625 लोगों का उपचार किया जा चुका है, जिनमें से 736 लोग नशामुक्त हो चुके हैं। जिले में स्कूलों, कॉलेजों एवं मोहल्लों में नुक्कड़ नाटक, पाम्पलेट वितरण तथा विभिन्न जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से निरंतर नशामुक्ति अभियान चलाया जा रहा है।

इस अवसर पर एएसपी शोभराज अग्रवाल, चेयरमेन संजय रूंगटा, डायरेक्टर डॉ.साकेत रूंगटा, कार्तिक कृष्णा, अभिषेक सुराना, प्रजापति ब्रम्हकुमारी दीदी, एसडीएम दुर्ग प्रफुल्ल गुप्ता, समाज कल्याण विभाग के उप संचालक ए.पी.गौतम सहित विभागीय अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में युवा उपस्थित थे।

खास खबर

विद्युत सब स्टेशन से कृषि और ग्रामीण आवासीय बिजली की मांग को लेकर 6 को ईडी कार्यालय के समक्ष किसानों ने किया प्रदर्शन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ प्रगतिशील किसान संगठन की बैठक आज धमधा ब्लाक के लिटिया में हुई। बैठक में नवनिर्मित 220/132 के वी क्षमता के विद्युत सबस्टेशन से ग्रामीण आवास और कृषि प्रयोजन से बिजली न देकर औद्योगिक प्रयोजन से बिजली आपूर्ति करने पर रोष व्यक्त किया गया। सीएसपीडीसीएल द्वारा मुआवजा दिए और प्रभावित किसानों की सहमति के बिना खेतों में टावर लगाने का भी विरोध किया गया।

बैठक में निर्णय लिया गया है कि अवैध टावर स्थापित करने और सब स्टेशन से ग्रामीण आवास और कृषि प्रयोजन से बिजली देने के मुद्दों पर गुरुवार 6 अगस्त को 11.30 बजे बिजली कंपनी के ईडी कार्यालय दुर्ग के समक्ष किसानों द्वारा प्रदर्शन किया जायेगा। छत्तीसगढ़ प्रगतिशील किसान संगठन की बैठक में आसपास के गांव के अनेक किसान शामिल हुए।

बीएसपी के मुख्य चिकित्सा अधिकारी-चिकित्सा प्रमुख की डॉ. उदय को मिली जवाबदारी

भिलाई। सेल-भिलाई स्टील प्लांट के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं विभाग में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. उदय ने मेडिकल हेड की जवाबदारी एक अगस्त शनिवार से संभाल ली है। डॉ. उदय के साथ सुखद संयोग यह जुड़ा है कि उनका जन्म भी इसी सेक्टर-9 अस्पताल में हुआ था, जहां की अब वे कमान संभाल चुके हैं। शनिवार को उन्होंने इस्पात भवन जाकर निदेशक प्रभारी चित्तरंजन महापात्र, कार्यपालक निदेशक सामग्री प्रबंधन और प्रभारी चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं विभाग एमएम चक्रवर्ती तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की और इसके बाद जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केंद्र सेक्टर-9 पहुंच कर विभाग प्रमुख का कार्यभार संभाला। देर शाम तक उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा रहा।

उल्लेखनीय है कि डॉ. उदय के पिता भिलाई इस्पात संयंत्र में कार्यरत थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक की पढ़ाई भिलाई इस्पात संयंत्र के सेक्टर-6 स्थित स्कूलों में हुई। इसके बाद उन्होंने कल्याण कॉलेज से बीएससी प्रथम वर्ष की पढ़ाई की और पीएमटी में चयनित होकर रायपुर मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस एवं एमएस की डिग्री प्राप्त की। वर्ष 1994 में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केंद्र, सेक्टर-9 में मेडिकल ऑफिसर के रूप में बर्न विभाग में अपनी सेवाएं शुरू कीं। वर्ष 2013 में बर्न एवं प्लास्टिक सर्जरी विभागाध्यक्ष बनने के बाद उन्होंने विभाग को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनके नेतृत्व में भिलाई का बर्न विभाग मध्य भारत के सर्वश्रेष्ठ बर्न विभागों में शामिल हुआ। डॉ. उदय कुमार की पहल पर भिलाई इस्पात संयंत्र के बर्न विभाग में मध्य भारत का पहला तथा सेल का पहला स्किन बैंक स्थापित किया गया। इस स्किन बैंक के माध्यम से अब तक सैकड़ों गंभीर रूप से झुलसे मरीजों की जान बचाई जा चुकी है।

चिकित्सा क्षेत्र के साथ-साथ डॉ. उदय कुमार ने अभिनय के क्षेत्र में भी अपनी विशेष पहचान बनाई। उन्होंने बॉलीवुड की हिंदी फिल्म 'रमाई' में भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। अपनी सरलता, मुस्कुराते हुए सद्भावपूर्ण व्यवहार और मरीजों के प्रति समर्पण के कारण डॉ. उदय आमजन के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। गंभीर रूप से जले मरीजों के सफल उपचार में उनकी विशेषज्ञता के चलते मरीज और उनके परिजन उनकी सलामती के लिए मंदिरों में कथा-यज्ञ आयोजित करते हैं तथा दरगाहों पर चादर भी चढ़ाते हैं। चिकित्सा सेवा के अलावा डॉ. उदय कुमार पिछले 32 वर्षों से लगातार ग्रामीण क्षेत्रों में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाकर जरूरतमंदों की सेवा कर रहे हैं।

दुर्ग पुलिस की पहल रंग लाई, 2026 में सड़क हादसों में मृतकों की संख्या में आई बड़ी गिरावट

जनवरी से जुलाई तक 162 मौतें, 2025 की तुलना में 63 कम

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

यातायात पुलिस दुर्ग के सघन अभियान और जागरूकता प्रयासों का असर सड़क सुरक्षा के आंकड़ों में दिखने लगा है। वर्ष 2026 के पहले 7 महीनों में जिले में सड़क दुर्घटनाओं में मृतकों की संख्या में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है।

2026 में बेहतर हुए आंकड़े

यातायात पुलिस के अनुसार 01 जनवरी से 31 जुलाई 2026 तक जिले में 860 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। इनमें 685 लोग घायल हुए और 162 लोगों की मौत हुई। तुलना करें तो इसी अवधि में 2025 में 225 और 2024 में 213 लोगों की मृत्यु हुई थी। इस तरह 2026 में मृतकों की संख्या में 63 की कमी आई है।

कैसे मिली सफलता

दुर्ग पुलिस ने हेलमेट, सीट बेल्ट, नशे में वाहन

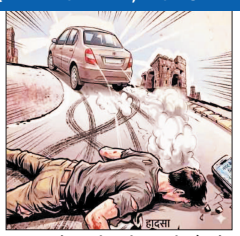

चलाना, ओवर स्पीड, तीन सवारी और नो-पार्किंग जैसे उल्लंघनों पर लगातार सख्त प्रवर्तन किया। इसके साथ ही स्कूल-कॉलेज, औद्योगिक संस्थानों और आम नागरिकों के बीच व्यापक सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाए गए। ब्लैक स्पॉट की निगरानी, संवेदनशील मार्गों पर अतिरिक्त बल की तैनाती, दुर्घटना के बाद त्वरित राहत और बचाव कार्य भी मृतकों की संख्या घटाने में मददगार साबित हुए।

यातायात स्थिति

जनवरी से जुलाई 2026 तक सर्वाधिक दुर्घटनाएं सुपेला 139, भिलाई नगर 82 और मोहन नगर 70 में दर्ज की गईं। सर्वाधिक मौतें भिलाई नगर 26, जुनवानी 17 और नंदिनी 15 में हुईं। वहीं मोहन नगर 2, स्मृतिनगर 2 और जेवरा-सिरसा 1 में सबसे कम मौतें दर्ज की गईं।

पुलिस की अपील

दुर्ग पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि वाहन चलाते समय हेलमेट और सीट बेल्ट जरूर पहनें, गति सीमा का पालन करें, नशे में वाहन न चलाएं और मोबाइल का उपयोग न करें। पुलिस का कहना है कि चालान से ज्यादा उद्देश्य हर नागरिक के जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

3 पुलिस अधिकारियों को सम्मानपूर्ण दी गई विदाई

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कार्यालय, दुर्ग में पुलिस विभाग से सेवानिवृत्त हो रहे तीन अधिकारियों के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर उप निरीक्षक सौमित्र भोई, सहायक उप निरीक्षक रोहित मरकाम एवं सहायक उप निरीक्षक तालसिंह को सम्मानपूर्वक विदाई दी गई। समारोह में उप पुलिस महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल ने सेवानिवृत्त अधिकारियों और उनके परिजनों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। बाद में उन्हें शाल और श्रीफल भेंट कर सम्मानित करते हुए उनके स्वस्थ, सुखद और सम्मानपूर्ण भविष्य की शुभकामनाएं दीं। करीब 35 से 40 वर्षों तक पुलिस विभाग में सेवाएं देने वाले अधिकारियों ने अपने सेवाकाल के अनुभव साझा किए। उन्होंने विभिन्न चुनौतियों और यादगार घटनाओं का उल्लेख करते हुए वर्तमान पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने अनुभवों से सीख लेने का संदेश दिया। इस अवसर पर एसएसपी विजय अग्रवाल ने कहा कि सेवानिवृत्त अधिकारियों की निष्ठा, समर्पण और दीर्घकालीन सेवाएं विभाग के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने कहा कि इन अधिकारियों का अनुभव दुर्ग पुलिस की अमूल्य धरोहर है और पुलिस परिवार भविष्य में भी उनके साथ हमेशा खड़ा रहेगा। कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) मणिशंकर चंद्रा, रक्षित निरीक्षक नीलकंठ वर्मा, निरीक्षक (एम) बृजमोहन सिंह राजपूत, सावित्री धुर्वे सहित वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

भिलाई शहर वासियों ने पं. रविशंकर शुक्ल और पं. विद्याचरण शुक्ल को दी श्रद्धांजलि

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

अविभाजित मध्यप्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और जननेता स्व. पंडित रविशंकर शुक्ल की जयंती पर रविवार को भिलाई के सेक्टर-9 स्थित जवाहरलाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केंद्र परिसर में उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता स्व. पंडित विद्याचरण शुक्ल को भी उनके जन्मदिवस पर याद करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

समारोह में कांग्रेस के विधायक, पूर्व विधायक, पूर्व मंत्री, भिलाई और दुर्ग के महापौर, जिला कांग्रेस पदाधिकारी, कांग्रेस सेवादल, कान्यकुब्ज सामाजिक चेतना मंच के प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में नागरिकों ने दोनों नेताओं के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर उनके योगदान को स्मरण किया। कार्यक्रम में पूर्व मंत्री बदरुद्दीन कुरैशी, पूर्व विधायक अरुण वोरा, भिलाई विधायक देवेंद्र यादव, भिलाई महापौर नीरज पाल, दुर्ग महापौर धीरज बाकलीवाल, जिला कांग्रेस अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर, पूर्व विधायक प्रतिभा चंद्राकर और शुक्ल परिवार की सदस्य माया रानी शुक्ल सहित अन्य वक्ताओं ने पंडित रविशंकर शुक्ल और पंडित विद्याचरण शुक्ल के व्यक्तित्व, राजनीतिक योगदान और प्रदेश के विकास में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर विधायक देवेंद्र यादव ने कहा कि भिलाई ने पिछले 71 वर्षों में देश को इस्पात, शिक्षा, संस्कृति, खेल और औद्योगिक विकास की नई पहचान दी है। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि आज भिलाई इस्पात संयंत्र और शहर दोनों चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नागरिकों से भिलाई को बचाने और पंडित रविशंकर शुक्ल के सपनों को साकार रखने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने भिलाई इस्पात संयंत्र को प्रदेश की आर्थिक रीढ़ बताते हुए कहा कि इसकी रक्षा के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।

कार्यक्रम का संचालन पं. रविशंकर शुक्ल सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति के सचिव मनोज मिश्रा ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन पूर्व महापौर आर.एन. वर्मा ने किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम के बाद जिला एवं ग्रामीण कांग्रेस के पदाधिकारी और कार्यकर्ता "भिलाई बचाओ रैली" के लिए रायपुर रवाना हुए। समारोह में कांग्रेस पदाधिकारियों, सामाजिक संगठनों, श्रमिक नेताओं, वरिष्ठ पत्रकारों और बड़ी संख्या में इस्पात नगरी के नागरिकों की उपस्थिति रही।

इस्पात कर्मचारी को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटी लिमिटेड सेक्टर-6 में रिटायर कर्मियों को दी विदाई

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई इस्पात संयंत्र के कर्मियों की पहली एवं प्रतिष्ठित सहकारी संस्था इस्पात कर्मचारी को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसायटी लिमिटेड सेक्टर-6 ने अपने सेवानिवृत्त सदस्यों के सम्मान में एक गरिमामय विदाई समारोह का आयोजन किया। जिसमें माह जून अथवा उसके पूर्व भिलाई इस्पात संयंत्र की सेवा से निवृत्त हुए सदस्यों को ससम्मान विदाई दी गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सोसायटी के अध्यक्ष बृज बिहारी मिश्र ने सेवानिवृत्त सदस्यों का शॉल एवं श्रीफल से सम्मान कर सोसायटी में जमा उनकी निधियों का खातादेय चेक प्रदान किया। इस दौरान मिश्र ने कहा कि सभी वरिष्ठ सदस्यों का योगदान कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा, क्योंकि इन्हीं सदस्यों के योगदान से हमारी सोसाइटी ने लगातार बेहतर प्रदर्शन और बेहतर परिणाम दिए हैं।

इस दौरान रिटायर कर्मियों ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की। ज्यादातर कर्मी अपना सेवाकाल याद करते हुए भावुक हो गए। कर्मियों ने बताया कि बीएसपी के पूरे सेवाकाल में जब भी पारिवारिक जरूरतों के लिए आर्थिक जरूरतें पड़ीं तो सेक्टर-6 सोसाइटी ने हमेशा सहारा दिया। इस अवसर पर रेल एंड स्ट्रक्चरल मिल से आरके द्विवेदी,जनरल इस्टैब्लिशमेंट से जेसी कुरियन, एलडीसीपी से एलके साहू, ब्लास्ट फर्नेस से अब्दुल सलीम,सोमनलाल,सिंटर प्लांट-2 से ईश्वर राम जंघेल,छतरराम साहू,मेडिकल से यशवंत कुमार, राधेश्याम,भाऊराव ढोके,प्लेट मिल से टीपी सिंह,वाटर मैनेजमेंट से राजेश पटेल,स्टील स्ट्रक्चरल शॉप से टेकराम डड़सेना,टाउन सर्विसेज से सुब्रमणि, आरके मिश्रा,पीपी एंड सी से एसके पांडे, जीएडी से मोहन,फायर ब्रिगेड से एसके शर्मा,रणधीर सिंह,फौजे शॉप से सीएस रावटे,मैकेनिकल सर्विसेज से एमजी कुमार राव,माइंस हेडक्वार्टर से वाईके शर्मा,पावर सिस्टम से श्याममूर्ति,स्टोर्स से पीके भोयर,मटेरियल रिकवरी डिपार्टमेंट से के बाबूराव और प्लांट गेराज से प्रभाकर ने सेवानिवृत्ति पर अपना सेवाकाल याद किया। इस अवसर पर संचालक मंडल के उपाध्यक्ष अमिताभ वर्मा तथा सदस्य हरिराम यादव, नीरज शर्मा, जेके गहिने,विनोद वासनिक और पवन साहू सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। संचालन संस्था के प्रबंधक एम.मुरलीधर व आभार प्रदर्शन वरिष्ठ चंचल प्रसाद तिवारी ने व्यक्त किया।

सड़क सुरक्षा पर दिया जोर : एक सप्ताह में ट्रैफिक पुलिस ने की 6592 वाहन चालकों पर की चालानी कार्रवाई

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने एवं आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यातायात पुलिस द्वारा जिलेभर में विशेष प्रवर्तन अभियान चलाकर एक सप्ताह में 6592 वाहन चालकों के विरुद्ध मोटरयान अधिनियम के तहत प्रभावी वैधानिक कार्रवाई की गई। अभियान के दौरान बिना हेलमेट चलने वाले 4,140, नो पार्किंग के 978, बिना सीट बेल्ट के 513 तथा तीन सवारी चलाने वाले 434 वाहन चालकों पर चालानी कार्रवाई कर यातायात नियमों के पालन के प्रति जागरूक किया गया।

शराब सेवन कर वाहन चलाने वाले 48 वाहन चालकों के विरुद्ध न्यायालयीन कार्रवाई हेतु प्रकरण तैयार किए गए तथा तेज रफ्तार, मोबाइल का उपयोग, नो-एंट्री उल्लंघन, ब्लैक फिल्म एवं अन्य यातायात नियमों के उल्लंघन पर भी सख्त कार्रवाई की गई। यातायात पुलिस दुर्ग द्वारा प्रवर्तन कार्रवाई के साथ-साथ लगातार जनजागरूकता अभियान भी संचालित किया जा रहा है, जिससे नागरिकों में सुरक्षित एवं जिम्मेदार यातायात व्यवहार विकसित हो तथा सड़क दुर्घटनाओं में प्रभावी कमी लाई जा सके।

यातायात पुलिस दुर्ग द्वारा अभियान के दौरान जिले के प्रमुख चौक-चौराहों, राष्ट्रीय राजमार्ग, व्यस्त बाजार क्षेत्रों, स्कूल-कॉलेजों के आसपास तथा दुर्घटना संभावित स्थानों पर नियमित वाहन चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान ऐसे वाहन चालकों पर विशेष निगरानी रखी गई जो बिना हेलमेट वाहन चला रहे थे, सीट बेल्ट का उपयोग नहीं कर रहे थे, नो पार्किंग में वाहन खड़ा कर रहे थे, तीन सवारी बैठाकर वाहन चला रहे थे अथवा अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन कर स्वयं एवं अन्य नागरिकों के जीवन को जोखिम में डाल रहे थे। ऐसे सभी मामलों में मोटरयान अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार वैधानिक कार्रवाई की गई।

यातायात पुलिस के अनुसार सर्वाधिक कार्रवाई बिना हेलमेट, नो पार्किंग, बिना सीट बेल्ट एवं तीन सवारी के मामलों में की गई है। यह दर्शाता है कि अनेक वाहन चालक अभी भी मूलभूत यातायात नियमों की अनदेखी कर रहे हैं। सड़क दुर्घटनाओं में सिर पर गंभीर चोट, मृत्यु एवं गंभीर शारीरिक क्षति का प्रमुख कारण हेलमेट एवं सीट बेल्ट का उपयोग न करना पाया गया है। इसी प्रकार शराब सेवन कर वाहन चलाना, मोबाइल का उपयोग करते हुए वाहन चलाना तथा तेज गति से वाहन चलाना भी गंभीर सड़क दुर्घटनाओं के प्रमुख कारण हैं।

यातायात पुलिस दुर्ग के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा समन्वित रूप से जिलेभर में लगातार वाहन जांच, यातायात प्रबंधन एवं जनजागरूकता अभियान संचालित करते हुए प्रभावी प्रवर्तन कार्रवाई की गई, जिससे यातायात नियमों के पालन के प्रति नागरिकों में सकारात्मक जागरूकता बढ़ी तथा सड़क सुरक्षा को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए गए।

दुर्ग पुलिस आम नागरिकों से अपील करती है कि सड़क पर निकलते समय यातायात नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करें। दोपहिया वाहन चलाते समय आईएसआई मानक हेलमेट तथा चारपहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का उपयोग करें। शराब सेवन के बाद वाहन न चलाएं, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग न करें, निर्धारित गति सीमा का पालन करें तथा नो-पार्किंग एवं नो-एंट्री नियमों का सम्मान करें। आपकी सतर्कता एवं नियमों का पालन ही सुरक्षित यातायात और सुरक्षित जीवन की सबसे बड़ी गारंटी है। यातायात पुलिस दुर्ग द्वारा सड़क सुरक्षा हेतु सघन प्रवर्तन एवं जनजागरूकता अभियान आगे भी निरंतर जारी रहेगा।

हेमचंद यादव विवि के कुलसचिव गिरफ्तार

दैनिक वेतनभोगी महिला कमर्चारी के वेतन से 1.49 लाख का गबन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग।

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय के कुलसचिव भूपेन्द्र कुमार कुलदीप को दैनिक वेतनभोगी महिला कमर्चारी के वेतन से 1,49,384 के गबन के आरोप में दुर्ग पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। मामला थाना मोहन नगर में दर्ज किया गया है।

थाना मोहन नगर पुलिस के अनुसार पीड़िता श्रीमती शुभांगी मराठे विश्वविद्यालय में अधर्कुशल दैनिक वेतनभोगी कमर्चारी हैं और आरोपी के निवास पर भोजन बनाने का काम भी करती थीं। शिकायत और विश्वविद्यालय की जांच समिति की रिपोर्ट में सामने आया कि पीड़िता का प्रतिमाह वेतन ?11,515 था। लेकिन आरोपी कुलसचिव दबाव बनाकर उसे सिर्फ 2,200 देते थे और बाकी राशि के जरिए अपने परिचित उदय कुलदीप के खाते में ट्रांसफर करवा लेते थे। यह गबन 06.02.2025 से 04.07.2026 के बीच किया गया। इस दौरान कुल 1,49,384 की हेराफेरी हुई।

बैंक अभिलेख, यूपीआई ट्रांजेक्शन और जांच समिति की रिपोर्ट के आधार पर आरोपी के खिलाफ धारा 316(4) बीएनएस के तहत थाना मोहन नगर में अपराध क्रमांक 550/2026 दर्ज किया गया। पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी भूपेन्द्र कुमार कुलदीप, उम्र 51 वर्ष, निवासी विवि परिसर को विधिवत गिरफ्तार कर लिया है। प्रकरण में आगे की विवेचना जारी है।

दुर्ग पुलिस की अपील

थाना प्रभारी निरीक्षक केशव राम कोशले और उनकी टीम की सराहनीय भूमिका रही। दुर्ग पुलिस ने अपील की है कि यदि कोई व्यक्ति पद का दुरुपयोग कर आर्थिक शोषण या अवैध वसूली करता है तो इसकी सूचना तत्काल नजदीकी थाने को दें। ऐसे मामलों में कठोर कारर्वाई की जाएगी।

दंतेवाड़ा से माओवादी मामले में आरोपी गिरफ्तार

गढ़चिरौली पुलिस ने किरंदुल में की तस्दीक

अहमदाबाद से पकड़ा गया किरंदुल निवासी ईश्वर राव, घर की तलाशी भी ली

नई दृष्टिबिंदु / दंतेवाड़ा।

महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले के थाना पिपली (बुर्गी) क्षेत्र में माओवादियों के नाम से बैनर-पोस्टर लगाने के मामले में दंतेवाड़ा जिले के किरंदुल निवासी एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी के घर की तलाशी के लिए गढ़चिरौली पुलिस की टीम 30 जुलाई को किरंदुल पहुंची थी।

पुलिस के अनुसार महाराष्ट्र के थाना पिपली (बुर्गी) क्षेत्र में माओवादियों के नाम से बैनर-पोस्टर लगाए जाने की सूचना मिली थी। इस संबंध में थाना पिपली में अपराध क्रमांक 01/2026 दर्ज किया गया है। इस मामले में इंटर की धारा 353(1)(इ), 189(2), 190, 61(2), 3(5), महाराष्ट्र पुलिस एक्ट की धारा 135 एवं *वअडअ 1967 की धारा 10, 13, 20, 39 के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना शुरू की गई थी। विवेचना के दौरान पहले दो आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद, मामले में शामिल होने के संदेह पर *किरंदुल निवासी ईश्वर राव पिता स्व. एस. रामलु, पता- मकान नंबर ऊ/578, किरंदुल, जिला दंतेवाड़ा* को *27.07.2026 को अहमदाबाद से गिरफ्तार* कर पुलिस रिमांड पर लिया गया। आरोपी की गिरफ्तारी के बाद तस्दीक और मकान की तलाशी के लिए 30 जुलाई को गढ़चिरौली पुलिस की टीम किरंदुल पहुंची। टीम ने विधिवत कार्यवाही कर आरोपी के घर और आसपास के तथ्यों की जांच की। पुलिस ने बताया कि प्रकरण में आगे की विवेचना जारी है और अन्य कड़ियों की भी जांच की जा रही है।

खास खबर

प्रेस क्लब में पावस गीतों की रसधार

11 वरिष्ठ गीतकारों ने बांधा समां

डॉ. शैलजा सिंह का "तन में सावन मन में सावन" और बिलगरामी की रचनाओं पर खूब तालियां गीत, संगीत और साहित्य की त्रिवेणी रविवार को प्रेस क्लब ऑफ इंडिया

नई दृष्टिबिंदु /नई दिल्ली

नई दिल्ली में उस समय बह निकली जब यहां "पावस गीत संगोष्ठी" का आयोजन हुआ। विशुद्ध गीत-केंद्रित इस आयोजन में देश के 11 प्रतिष्ठित गीतकारों ने वर्षा, प्रकृति और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम का प्रभावशाली संचालन सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ. ओंकार त्रिपाठी ने किया। उन्होंने कहा, "जब गद्य असमर्थ हो जाता है तब कविता जन्म लेती है, और जब कविता भी अभिव्यक्ति में असमर्थ हो जाती है तब गीत जन्म लेता है। गीत स्वयं रस है जो समाज पर रस-वर्षा करता है।"

गीत विधा को बचाने पर जोर

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साहित्यसेवी ऋषि कुमार शर्मा पूर्व उपसचिव, हिंदी अकादमी दिल्ली ने कहा कि गीत काव्य की सबसे सशक्त विधा है जिसमें भारतीय जीवन-मूल्य सहज रूप से झलकते हैं। उन्होंने युवा पीढ़ी को गीत से जोड़ने की जरूरत बताई ताकि इसकी गौरवशाली परंपरा बनी रहे।

सारस्वत अतिथि डॉ. सुशील द्विवेदी, सहायक संपादक साहित्य अकादमी ने कहा कि हमारे गीतों में भारतभूमि की गंध और छंद-विधान की गरिमा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। केवल धुन से नहीं, मौलिक संवेदना और भारतीयता से ही प्रामाणिक गीत बनता है।

सावन गीतों से सराबोर हुआ सभागार

सुप्रसिद्ध शायर-गीतकार शिवकुमार बिलगरामी ने लोकगीतों की आत्मा को संरक्षित रखने पर बल दिया। उन्होंने "कौन दिशा में छुपा कर बैठा ओ गंगाधर पर्वतवासी" और "कल्पवृक्ष की शाखाओं पर बंधे हुए हैं अनगिन धागे" जैसी रचनाएं सुनाकर वाहवाही लूटी।

कार्यक्रम की सबसे चर्चित प्रस्तुति डॉ. शैलजा सिंह की रही। उन्होंने अपना लोकप्रिय सावन-गीत "तन में सावन, मन में सावन, झीलों-नदियों, वन में सावन। खेत-बाग में झिमिर-झिमिर, बरसे घर-कुंजन में सावन..." सस्वर सुनाकर पूरे सभागार को सावन की अनुभूति से भर दिया।

इनकी रही भागीदारी

संगोष्ठी में डॉ. राजीव कुमार पांडेय, विनय विक्रम सिंह 'मनकही', नेहा वैद, नीना सहर, पीयूष कांति, नरेंद्र मस्ताना, डॉ. ईश्वर सिंह, शोभा सचान, डी.पी. सिंह सहित 11 वरिष्ठ गीतकारों ने गीत पाठ किया। प्रत्येक प्रस्तुति पर श्रोताओं ने तालियों से उत्साह बढ़ाया। साहित्यप्रेमियों का कहना था कि लंबे समय बाद दिल्ली में इतना गरिमामय और विशुद्ध गीत-केंद्रित आयोजन हुआ है, जिसने गीत-विधा में नई ऊर्जा का संचार किया है।

गांधी टोपी और "वंदे मातरम" के साथ शुरू हुई भिलाई बचाओ पदयात्रा का दूसरा दिन

चौक-चौराहों पर उमड़ा जनसैलाब, अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर ने किया जनसंपर्क

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई नगर।

बीएसपी और भिलाई टाउनशिप को बचाने की मांग को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी भिलाई द्वारा निकाली जा रही चार दिवसीय "भिलाई बचाओ पदयात्रा" का दूसरा दिन सोमवार को जोश के साथ संपन्न हुआ। पदयात्रा मगध तैलिक समाज भवन से प्रारंभ हुई। सेवादल के जे.आर. साहू ने अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर को गांधी टोपी पहनाई और सभी ने "वंदे मातरम" गीत के साथ यात्रा की शुरुआत की। अध्यक्ष श्री चंद्राकर के नेतृत्व में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, जिला पदाधिकारी और सैकड़ों कार्यकर्ता हाथों में कांग्रेस का ध्वज और बैनर लेकर पदयात्रा में शामिल हुए।

पदयात्रा श्री पोटलू रामलू चौक से शुरू होकर 18 नंबर रोड, सुभाष चौक, नेहरू चौक, महात्मा गांधी चौक, लिंक रोड, फल मंडी, जी रोड, अंबेडकर चौक, नंदनी रोड और कैनाल रोड होते हुए आगे बढ़ी। चौक-चौराहों पर ब्लॉक कांग्रेस पदाधिकारियों, पार्षदों और नागरिकों ने पदयात्रियों का फूल-माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। कई स्थानों पर भावुक पल भी देखने को मिले। बुजुर्ग महिलाओं ने श्री चंद्राकर को आशीर्वाद देकर गले से लगाया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर पदयात्रा परशुराम चौक, शिव मंदिर, गुरुद्वारा रोड, श्रीराम चौक, सुभाष मार्केट, मस्जिद, अग्रसेन रोड होते हुए देर शाम डबरापारा पहुंची, जहां रात्रि विश्राम की व्यवस्था थी। पदयात्रा में वरिष्ठ नेता धर्मेंद्र यादव, ब्लॉक अध्यक्ष गुड्डू खान, जितेंद्र साहू, अय्यूब खान, बृजमोहन सिंह, गिरिवर बंटी साहू, नीता लोधी, संदीप निरंकारी, नंदकुमार कश्यप, दीपक भाटिया, अनीशा बघेल, पिंकी वर्मा सहित सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

"भिलाई को मिटाने नहीं देंगे" - मुकेश चंद्राकर

जनसभाओं को संबोधित करते हुए अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर ने कहा कि "जिस भिलाई से हमारा अस्तित्व है, उसे मिटाने पर भाजपा आमादा है। हमें इसका पुरजोर विरोध करना होगा। भिलाई हमारे प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के सपनों का शहर है। इसे बचाने की जिम्मेदारी हम पर है। एकजुट होकर भाजपा के हर मंसूबे पर पानी फेरना है। नेताओं ने कहा कि यह पदयात्रा केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि भिलाई इस्पात संयंत्र, टाउनशिप और हजारों परिवारों के भविष्य की सुरक्षा का जनआंदोलन है। आने वाले दिनों में और अधिक लोगों को जोड़कर भिलाई के हितों की आवाज बुलंद की जाएगी।

जनहित संघर्ष समिति ने पुलिस कप्तान को दी जन्मदिन की बधाई, शहर की समस्याओं से कराया अवगत

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

जनहित संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल ने रविवार को पुलिस कप्तान से सौजन्य भेंट कर उन्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। समिति ने उनके स्वस्थ, सुखद एवं सफल जीवन की कामना करते हुए शहर में कानून-व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए शुभेच्छाएं व्यक्त कीं।

समिति के संयोजक शारदा गुप्ता के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने इस अवसर पर शहर की प्रमुख जनसमस्याओं से भी पुलिस कप्तान को अवगत कराया।

इन मुद्दों पर हुई चर्चा

प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस कप्तान के समक्ष *यातायात व्यवस्था में सुधार, बढ़ते अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण, अवैध गतिविधियों पर सख्त कार्रवाई, सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने तथा नागरिकों की शिकायतों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित करने की मांग रखी।

भाजपा नेता सुभाष शर्मा ने नेहरू नगर एवं स्मृति नगर क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं पर भी गंभीर चर्चा की।

पुलिस कप्तान ने दिया आश्वासन

पुलिस कप्तान ने समिति के सुझावों को गंभीरता से सुनते हुए जनहित से जुड़े मुद्दों पर आवश्यक कारवाई का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि आम जनता की सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखना पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकता है। नागरिकों के सहयोग से शहर को और अधिक सुरक्षित एवं व्यवस्थित बनाया जाएगा।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर डॉ. रमेश श्रीवास्तव, विरेन्द्र यादव, निशु पाण्डेय, गुरनाम सिंह, राजेश सिंह, विमलेश्वर पांडे, अफजल अहमद, सुंदर लाल पटेल, युवराज बघेल, हर्ष यादव, सागर सिंह, सोहन चंद्राकर, स्वप्निल साहू, संजू ठाकुर, राहुल, यश, विवेक सहित अन्य युवा साथी और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। जनहित संघर्ष समिति ने विश्वास व्यक्त किया कि पुलिस प्रशासन के सकारात्मक सहयोग से शहर की प्रमुख समस्याओं का प्रभावी समाधान होगा और नागरिकों को बेहतर सुरक्षा एवं सुविधाएं प्राप्त होंगी।

"कुछ सीखना है तो टॉपर बच्चों से सीखो, गाली देने वाले दोस्त से नहीं"

डॉ. सोनाली ने कोड़िया स्कूल में प्रोजेक्ट जागृति कार्यशाला में बच्चों को दी सीख

नई दृष्टिबिंदु /दुर्ग।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला ग्राम कोड़िया, जिला दुर्ग में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर प्रोजेक्ट जागृति के तहत एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें भाषा विशेषज्ञ डॉ. सोनाली चक्रवर्ती ने कक्षा 8वीं से 12वीं तक के 300 छात्र-छात्राओं को जीवन में भाषा और संस्कारों का महत्व समझाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की पूजा-अर्चना और दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इसके बाद छात्र-छात्राओं ने सभी गुरुजनों का शाल, श्रीफल और पुष्पगुच्छ से सम्मान कर आशीर्वाद लिया। भाषा दीदी के रूप में डॉ. सोनाली ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि "मनुष्य का संपूर्ण व्यक्तित्व खराब हो जाता है यदि उसकी भाषा अच्छी न हो।" उन्होंने बच्चों को गालियों से दूर रहने की समझाइश देते हुए कहा, "जिस मां से हम इतना प्यार करते हैं, जिन्होंने अपने सारे सपने अपने बच्चों के लिए त्याग दिए, उनका नाम गालियों में लाना उचित कैसे हो सकता है?" उन्होंने कहा कि इस उम्र में बच्चे बहुत जल्दी सीखते हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि क्या सीखा जा रहा है। "क्लास में टॉप करने वाले बच्चों से उनकी लगन और परिश्रम सीखना चाहिए, न कि दोस्तों से गलत भाषा। कार्यशाला में डॉ. सोनाली ने गीतों और कहानियों के माध्यम से बच्चों को मोटिवेट भी किया। उल्लेखनीय है कि पिछले ढाई वर्षों में डॉ. सोनाली इस अभियान के तहत अब तक 10,000 से अधिक बच्चों से मिलकर कार्यशालाएं ले चुकी हैं। शाला की प्राचार्य श्रीमती नीलमणि उज्जवने ने कहा कि यह कार्यक्रम बच्चों के व्यक्तित्व विकास में बेहद सहयोगी साबित होगा। शिक्षकों प्रीतम कुमार देवांगन, शीला चंद्रा, धनेश्वरी सिन्हा, चित्रांशीपणी बिसेन, प्रीति सलाम, हर्षा महलवार ने भी इसे जीवन जीने की कला सिखाने वाला कार्यक्रम बताया। कार्यक्रम का सफल संयोजन डॉ. सरोज साहू ने किया और संचालन हेड बॉय दीपेश कुमार ने किया।

रफी फाउंडेशन की संगीतमय श्रद्धांजलि में गूंजे मोहम्मद रफी के अमर नगमे

महापौर अलका बाघमार मुख्य अतिथि, कलाकारों ने बांधा समां

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग।

पद्मश्री स्वर सम्राट मोहम्मद रफी को संगीतमय श्रद्धांजलि देने के लिए द वॉइस ऑफ दुर्ग सिटी रफी फाउंडेशन द्वारा 30 जुलाई को मुस्लिम सराय, तकिया में भव्य संगीत संध्या का आयोजन किया गया। रफी साहब के अमर गीतों की सुरमयी प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को देर रात तक संगीत रस में डुबाए रखा।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि दुर्ग शहर की प्रथम नागरिक महापौर श्रीमती अलका बाघमार थीं। उन्होंने आयोजन की मुक्तकंठ से सराहना करते हुए फाउंडेशन के अध्यक्ष संजय लारोकर एवं टीम को बधाई दी। कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज में संगीत एवं सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखते हैं। विशिष्ट अतिथियों में समाजसेवी कैलाश जैन बरमेचा, लायनेस क्लब अध्यक्ष श्रीमती आकांक्षा मिश्रा, सेवानिवृत्त उप वनमंडलाधिकारी अब्दुल वाहिद खान और यादें मुकेश भिलाई के संचालक वी. डी. निजामी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती और मोहम्मद रफी के तैलचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। इसके बाद फाउंडेशन ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया। विशेष अतिथि सरमद इमाम ने "रहा गर्दिशों में हरदम मेरे इश्क का सितारा" और "तेरी आंखों के सिवा दुनिया में रखा क्या है" प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। उन्होंने कलाकारों और फाउंडेशन के लिए प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा भी की। कैलाश जैन बरमेचा सहित अन्य संगीत प्रेमियों ने उत्कृष्ट प्रस्तुतियों पर कलाकारों को नगद पुरस्कार दिए। संध्या में "बेखुदी में सनम", "आया सावन झूम के", "झिलमिल सितारों का आंगन होगा", "पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा", "इशारों-इशारों में", "तुझको पुकारे मेरा प्यार" सहित रफी साहब के अनेक गीत प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा "फूल तुम्हें भेजा है खत में", "लंबी जुदाई", "चलते-चलते" जैसे सदाबहार गीतों ने भी समां बांधा। संचालन फाउंडेशन के सचिव जाहिद अली ने किया। अध्यक्ष संजय लारोकर ने भी अपनी गायकी से श्रोताओं का मनोरंजन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में संगीत प्रेमी, समाजसेवी और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। समापन पर कैलाश जैन बरमेचा, संजय लारोकर, जाहिद अली और कोषाध्यक्ष *माधुरी लारोकर* ने सभी कलाकारों एवं सहयोगियों को सम्मानित किया। सचिव जाहिद अली ने आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया।

संपादकीय

हर किसी का अपना सावन है

सावन सिर्फ बारिश का मौसम नहीं है, बल्कि जीवन के सभी रूपों का उत्सव है। भारत मानसून के आगमन के साथ मौसम में बदलाव का स्वागत करता है, और इससे भी कहीं अधिक। यह एक ऐसे मौसम की शुरुआत है जो फलों की भरपूर फसल, ताजगी और नए जीवन को जन्म देता है, साथ ही मानव हृदयों में नई आशा और सदियों से समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करता है। महीनों की भीषण गर्मी और चिलचिलाती धूप के बाद बारिश होती है; यह केवल प्यासी धरती के लिए ही पानी नहीं है, बल्कि जागृत सपनों के लिए, थकी हुई आत्माओं को ऊर्जा प्रदान करने के लिए और अग्नि के सानिध्य में जीने वाले हम जैसे लोगों को बंजरपन का सामना करने और यह जानने की याद दिलाने के लिए है कि इसके बाद हरियाली और नया जीवन आएगा।

कई मायनों में सावन भारत का सबसे लोकतांत्रिक मौसम है। यह सबके लिए उपलब्ध है, लेकिन हर व्यक्ति के लिए इसका अपना अनूठा महत्व है। अलग-अलग लोगों के लिए, उनके पेशे, उम्र, यादों, आस्था, आकांक्षाओं और परिस्थितियों के अनुसार इसके अलग-अलग अर्थ होते हैं। कुछ के लिए यह सफलता का प्रतीक है, तो दूसरों के लिए प्रेम का। कई लोगों के लिए यह आस्था की यात्रा है, तो बच्चों के लिए मस्ती का! जी हां, हममें से हर कोई अपने-अपने तरीके से सावन का अनुभव करता है। भारत के किसानों के लिए सावन सिर्फ बारिश नहीं, बल्कि जीवन और जीने का मौका है। कृषि आज भी इस देश में लाखों लोगों का प्रमुख रोजगार स्रोत है और बारिश का समय पर आना या न आना कई जगहों पर जीवन-मरण का सवाल होता है। हम सभी को इंतजार करना पड़ता है, और हर बादल उम्मीद लेकर आता है, हर बौछार राहत देती है, हर हरा-भरा खेत महीनों के धैर्य और मेहनत का फल होता है। समय पर बारिश होने से मिट्टी उपजाऊ होती है और किसान का आत्मविश्वास भी बढ़ता है। सफलता के बिना, आशावाद की जगह चिंता ले लेती है। इसलिए किसान सावन पर निर्भर है और उसे इस पर भरोसा करना ही चाहिए।

सावन भारतीय कविता का अभिन्न अंग रहा है। वसंत ऋतु प्रेम के द्वार खोलती है, वहीं वर्षा ऋतु प्रेम और भावनाओं की प्रचुरता की अभिव्यक्ति मानी जाती है। प्राचीन संस्कृत के कवियों, मध्यकालीन भक्ति संतों, लोकगीतों और समकालीन लेखकों को काले बादलों, हल्की फुहारों, दूर-दूर तक फैले तूफानों और वर्षा से व्याकुल दृश्यों से प्रेरणा मिली है। ऐसा लगता है कि बारिश का मौसम प्रेम को एक नई लय देता है। बारिश परिदृश्य और भावनाओं को शांत और मधुर बना देती है। कीचड़ से सनी सड़कें, झूमते पेड़, ठंडी हवा, धुंधली परछाइयाँ ह्व ये सभी दृश्य चिंतन और आत्मीयता को प्रेरित करते हैं। वास्तव में, भारत की कुछ बेहतरीन कविताएँ, संगीत और चित्रकलाएँ बारिश के रोमांस को सम्मान देती हैं, शायद इसलिए कि यह महज एक संयोग नहीं है। सावन का मौसम देश के गांवों में लोगों के जीवन को त्योहारों में बदल देता है। बरगद, नीम और पीपल के पेड़ों पर झूले लगाए जाते हैं। चमकीले कपड़े पहने युवतियां मल्हार और कजरी जैसे पारंपरिक गीत गाती हैं, जिनमें प्रेम, एकांत और प्रकृति की समृद्धि का वर्णन होता है। नवविवाहित बेटियों के लिए यह मौसम अक्सर बचपन के घर को यादों से भर देता है और उन रिश्तों को फिर से जीवंत करने का अवसर होता है जो भले ही टूट गए हों, लेकिन कभी खोए नहीं। यह सिर्फ एक सांस्कृतिक परंपरा नहीं, बल्कि जीने का एक तरीका है; ये लोक परंपराएं हैं और भारत के भावनात्मक और सामाजिक ताने-बाने की अभिव्यक्ति हैं।

सावन का मौसम बच्चों की तरह आनंदित होता है। उन्हें कृषि उत्पादन या मौसम पूर्वानुमान की कोई चिंता नहीं होती। बारिश का मतलब है नंगे पैर नाचना, पानी के गड्ढों में कागज की नावें तैराना, इंद्रधनुष के पीछे खेलना और खुलकर हंसना। जब वे खुश होते हैं, तो ऐसा लगता है मानो बड़ों को एक सरल तथ्य याद आ रहा हो: कभी-कभी, खुशी छोटी-छोटी चीजों में ही होती है! लेकिन आजकल के बच्चे बाहर और निर्धारित गतिविधियों में बहुत कम समय बिताते हैं। कई बच्चों के लिए मानसून उस समय में आता है जब डिजिटल मनोरंजन बाहरी खेलों की जगह ले रहा होता है। प्रकृति के साथ इस घनिष्ठ संबंध को संरक्षित करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि जंगलों और नदियों के साथ। लेकिन वृद्ध लोगों के लिए सावन का अर्थ अलग होता है। जब बारिश के दिन आते हैं, तो उन्हें कई बातें याद आ जाती हैं: बचपन के खेल, बचपन की दोस्ती, पारिवारिक मिलन और सादगी भरे पल। यह सिर्फ खिड़की के पास बैठकर गर्म चाय की चुस्की लेते हुए बाहर बारिश की हल्की आवाज सुनने का समय नहीं है, बल्कि यह जीवन भर के अनमोल पलों को याद करने का समय है। इस मायने में मानसून स्मृतियों का साथी होता है।

यह ऋतु आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्रावण सबसे पवित्र माह है जो भगवान शिव को समर्पित है और प्रत्येक वर्ष, भारत में बड़ी संख्या में लोग उनके मंदिरों में दर्शन के लिए जाते हैं। अनुशासन, त्याग और आस्था वे प्रमुख तत्व हैं जिनके माध्यम से तीथर्यात्री लंबी यात्राओं पर निकलते हैं और नदियों से पवित्र जल लाकर शिव मंदिरों में अर्पित करते हैं। ये सभी अनूठी भारतीय परंपराएं हैं जहां दुनिया और प्रकृति आपस में जुड़ी हुई हैं और आध्यात्मिक महत्व रखती हैं। नदियां, पहाड़, जंगल, वर्षा और भूमि केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं हैं बल्कि जीवन के लिए पवित्र स्थान रखते हैं। आज सावन पर्यावरण में असंतुलन का भी प्रतीक है। जलवायु परिवर्तन ने वर्षा के पैटर्न पर गहरा प्रभाव डाला है। कुछ क्षेत्रों में सामान्य से सौ गुना अधिक वर्षा होती है, जिससे बाढ़ और भूस्खलन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं, वहीं कुछ क्षेत्रों में लंबे समय तक सूखा पड़ता है। शहरीकरण की गति तेज हो गई है और आद्रभूमि की जगह कंक्रीट का निर्माण हो गया है, जिससे प्राकृतिक जल निकासी व्यवस्था कमजोर हो गई है और शहरी बाढ़ की समस्या बढ़ गई है। हालांकि, पानी की अधिकता के साथ-साथ पानी की कमी भी हो रही है। यह मौसम, जो पहले प्रचुरता का प्रतीक हुआ करता था, अब हमें पारिस्थितिक नाजुकता के प्रति अधिकाधिक जागरूक बना रहा है।

सलिए सावन उत्सव का विषय है और इसके प्रति जिम्मेदारी की भावना भी आवश्यक है। वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण अब वैकल्पिक नीतियां नहीं रह गई हैं, न ही वृक्षारोपण, आद्रभूमि संरक्षण और सतत शहरी नियोजन। कोई भी आकाश से गिरने वाली पानी की उस अनमोल बूंद को बर्बाद नहीं करना चाहेगा। आज, चिकित्साकरण, प्रतिस्पर्धा और अलगाव से भरी इस दुनिया में, जहाँ हर किसी का दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है, मानसून लयबद्ध रूप से ह्वरुक जाओ !ह्व का आह्वान करता है। यह प्रतीक्षा, प्रचुरता, नवीनीकरण और आशा का पाठ है। यह इस बात की गारंटी है कि कोई भी खराब फसल हमेशा के लिए नहीं रहेगी। सूखी भूमि एक बार फिर सुंदर पौधों से भर जाएगी, और थके हुए दिलों को भी नई खुशी मिलेगी। मानसून वास्तव में अपने आप में एक अनोखी जलवायु घटना है। यह जीवन का एक तरीका है। यह एक ऐसी सीख है जो कहती है कि हर अंत के पीछे एक शुरुआत होती है; हर सूखा खत्म होता है, हर खामोशी एक गीत होती है।

आज और आगे भी जब तक बारिश होती रहेगी, आइए हम इसे जीवनदायी उपहार के रूप में स्वीकार करें और उन मूल्यों को भी अपनाएं जो यह हमें सिखाती है। आइए हम जल बचाएं, प्रकृति बचाएं, रिश्तों को मजबूत करें, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करें और खुले दिल से नवीनीकरण का स्वागत करें। आखिरकार, हर किसी का अपना सावन होता है।

पदकों की बौछार : भारतीय बॉक्सिंग में सबसे सुनहरा अध्याय

महेन्द्र तिवारी

खेलों की दुनिया में कुछ क्षण ऐसे होते हैं जो इतिहास के पन्नों पर हमेशा के लिए स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हो जाते हैं। ग्लासगो में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल 2026 में भारतीय मुक्केबाजों ने ठीक ऐसा ही एक स्वर्णिम अध्याय लिखा है। जब रिंग में भारत के मुक्केबाज उतर रहे थे तो उनके चेहरों पर एक अलग ही आत्मविश्वास और आंखों में जीत की अचूक चमक थी। यह चमक केवल एक दिन की मेहनत का परिणाम नहीं थी बल्कि इसके पीछे सालों का पसीना, अनगिनत संघर्ष और वैश्विक पटल पर खुद को साबित करने की अदम्य इच्छाशक्ति छिपी थी। भारतीय दल ने इस बार बॉक्सिंग इवेंट के दस फाइनल मुकाबलों में हिस्सा लिया और सभी दस में पदक जीतकर यह साबित कर दिया कि भारतीय मुक्केबाजी अब एक नए मुकाम पर पहुंच चुकी है। सात स्वर्ण और तीन रजत पदक जीतना कोई सामान्य बात नहीं है। यह राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास में भारत का अब तक का सबसे बेहतरीन मुक्केबाजी प्रदर्शन है जिसने देश का सिर फक्र से ऊंचा कर दिया है।

इस ऐतिहासिक सफलता को केवल पदकों की संख्या से नहीं आंका जा सकता है। इसके पीछे भारत के छोटे शहरों, गांवों और कस्बों से निकलकर आई उन प्रतिभाओं की कहानी है जिन्होंने तमाम अभावों के बावजूद अपने सपनों को मरने नहीं दिया। जब हम मुक्केबाजी की बात करते हैं तो हरियाणा के भिवानी और रोहतक जैसे शहरों का जिक्र आना स्वाभाविक है लेकिन इस बार पदक विजेताओं की सूची इस बात की गवाही देती है कि अब खेल का यह जुनून पूरे देश में फैल चुका है। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ की दूरदर्शी नीतियां, सरकार का निरंतर समर्थन और प्रशिक्षकों की दिन रात की मेहनत ने मिलकर एक ऐसा इकोसिस्टम तैयार किया है जहां अब केवल हिस्सा लेने के लिए नहीं बल्कि जीतने के लिए खिलाड़ी रिंग में उतरते हैं। इस बार का प्रदर्शन इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भारतीय मुक्केबाज अब तकनीकी और शारीरिक दोनों ही मोर्चों पर दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को धूल चटाने का माद्दा रखते हैं।

इस अभूतपूर्व सफलता में सबसे ज्यादा ध्यान खींचने वाली बात भारतीय महिला मुक्केबाजों का दबदबा रहा है। महिला वर्ग में भारत ने पांच अलग-अलग भार वर्गों में सीधे स्वर्ण पदक अपने नाम किए जो महिला सशक्तिकरण की एक जीती जागती मिसाल है। इक्यावन किलोग्राम भार वर्ग में साक्षी चौधरी, चौवन किलोग्राम में प्रीति पवार, सत्तावन किलोग्राम में जैस्मिन लंबोरिया, साठ किलोग्राम में प्रिया घंघस और सत्तर किलोग्राम भार वर्ग में अरुंधति चौधरी ने जिस आक्रामकता और तकनीकी कौशल का प्रदर्शन किया उसने पूरी दुनिया के खेल पंडितों को चकित कर दिया। इन महिला खिलाड़ियों ने साबित कर दिया कि भारतीय बेटियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। उनके घूंसे केवल विरोधी खिलाड़ियों पर ही नहीं पड़े बल्कि समाज की उन रूढ़िवादी सोच पर भी पड़े हैं जो लड़कियों को चारदीवारी में सीमित रखना चाहती है। रिंग के अंदर उनकी फुर्ती, सटीक फुटवर्क और सही समय पर पंच मारने की कला ने उन्हें अजेय बना दिया। यह जीत भारत की हर उस युवा लड़की के लिए एक प्रेरणा है जो अपने लिए एक बड़ा सपना देखने की हिम्मत जुटा रही है।

पुरुष वर्ग में भी भारतीय मुक्केबाजों ने अपने शानदार प्रदर्शन से पदकों की झड़ी लगा दी। साठ किलोग्राम भार वर्ग में सचिन सिवाच और अस्सी किलोग्राम भार वर्ग में अंकुश पंघाल ने स्वर्ण पदक जीतकर यह संदेश दिया कि भारतीय पुरुष मुक्केबाजी का भविष्य अत्यंत सुरक्षित और उज्ज्वल है। इन दोनों युवा खिलाड़ियों ने रिंग में जिस संयम और आक्रामकता का संतुलन दिखाया वह देखने लायक था। उन्होंने अपने विरोधियों को कोई मौका नहीं दिया और अपनी अचूक रणनीतियों से मुकाबलों को एकतरफा बना दिया। इसके अलावा पचपन किलोग्राम में जदुमणि सिंह और नब्बे प्लस किलोग्राम भार वर्ग में नरेंद्र बेरवाल ने भी रजत पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया। यह रजत पदक भी सोने से कम नहीं हैं क्योंकि उन्होंने फाइनल तक के सफर में दुनिया के कई दिग्गज मुक्केबाजों को मात दी थी। उनका यह प्रदर्शन आने वाले विश्व कप और ओलंपिक जैसे बड़े आयोजनों के लिए एक मजबूत नींव का काम करेगा।

अनुभवी खिलाड़ियों का प्रदर्शन भी इस दल की एक बड़ी ताकत रहा। ओलंपिक पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन ने पचहत्तर किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक जीतकर अपनी निरंतरता साबित की। खेल में उतार चढ़ाव आते रहते हैं और कई बार फाइनल मुकाबले बहुत ही करीबी अंतर से छूट जाते हैं लेकिन लवलीना का पोडियम तक पहुंचना यह बताता है कि उनके अंदर अभी भी खेल के प्रति वही पुरानी आग बाकी है। उनकी उपस्थिति मात्र से ही युवा खिलाड़ियों को बहुत कुछ सीखने को मिला होगा। एक वरिष्ठ खिलाड़ी के रूप में उन्होंने पूरे दल का मार्गदर्शन किया और उनका यह अनुभव भविष्य की प्रतियोगिताओं में भारत के लिए बहुत उपयोगी साबित होने वाला है।

इस जीत के पीछे के विज्ञान और तकनीकी पहलुओं को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आज के दौर में मुक्केबाजी केवल ताकत का खेल नहीं रह गया है। यह दिमाग, तकनीक, स्पोर्ट्स साइंस और वीडियो एनालिटिक्स का एक जटिल मिश्रण बन चुका है। भारतीय मुक्केबाजों की इस सफलता के पीछे उनके कोच और सपोर्ट स्टाफ का एक बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने हर विरोधी खिलाड़ी की कमजोरियों का बारीकी से अध्ययन किया और उसी के अनुसार रणनीतियां बनाईं। खिलाड़ियों की डाइट से लेकर उनकी मानसिक सेहत तक हर छोटी-छोटी बात का ख्याल रखा गया। हाल ही में खेलों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा जो भारी भरकम बजट आवंटित किया गया है उसका असर अब जमीन पर दिखने लगा है। जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं को तराशने की जो मुहिम शुरू की गई थी वह अब वटवृक्ष का रूप ले रही है। जब किसी एथलीट को विश्व स्तरीय सुविधाएं मिलती हैं तो उसका आत्मविश्वास अपने आप बढ़ जाता है और यही आत्मविश्वास हमें ग्लासगो के बॉक्सिंग अरीना में देखने को मिला।

राष्ट्रमंडल खेलों में मुक्केबाजी के इस स्वर्णिम प्रदर्शन ने भारत की समग्र पदक तालिका में भी एक बड़ा उछाल ला दिया है। इसके कारण भारत अंक तालिका में शीर्ष देशों की कतार में मजबूती से खड़ा हो गया है। एक समय था जब भारत केवल शूटिंग या कुश्ती जैसे कुछ गिने चुने खेलों पर ही पदकों के लिए निर्भर रहता था लेकिन अब मुक्केबाजी ने भी खुद को एक प्रमुख खेल के रूप में स्थापित कर लिया है। यह बदलाव रातोंरात नहीं आया है। वर्ष दो हजार अठारह के गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने तीन स्वर्ण सहित कुल सात पदक जीते थे जो उस समय तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। लेकिन अब उस रिकॉर्ड को तोड़ते हुए दस पदक और उनमें भी सात स्वर्ण जीतना एक बहुत बड़ी छलांग है। यह इस बात का संकेत है कि भारतीय खेल प्रणाली अब एक परिपक्वअवस्था में पहुंच चुकी है जहां हम अपने ही रिकॉर्ड को तोड़कर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

इस ऐतिहासिक जीत का असर केवल पदक तालिका तक सीमित नहीं रहेगा। इसका सबसे बड़ा प्रभाव भारत के उन लाखों युवाओं पर पड़ेगा जो खेल की दुनिया में अपना करियर बनाना चाहते हैं। जब देश का कोई खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर राष्ट्रध्वज लेकर खड़ा होता है और राष्ट्रगान बजता है तो वह पल पूरे देश को एक सूत्र में पिरो देता है। आज साक्षी, प्रीति, सचिन और अंकुश जैसे खिलाड़ी युवाओं के नए रोल मॉडल बन गए हैं। वे गांव और कस्बों में बने अखाड़ों और रिंग में पसीना बहा रहे बच्चों के लिए एक जीती जागती उम्मीद हैं। यह जीत खेल संस्कृति को एक नया आयाम देगी और माता पिता को भी यह विश्वास दिलाएगी कि खेलों में भी एक सुनहरा भविष्य बनाया जा सकता है। यह खेल संघों और प्रायोजकों को भी मुक्केबाजी में और अधिक निवेश करने के लिए प्रेरित करेगा जिससे आने वाले समय में हमें और भी बेहतर सुविधाएं और परिणाम देखने को मिलेंगे।

अंत में यह कहना बिल्कुल भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ग्लासगो में भारतीय मुक्केबाजों ने जो किया है वह सदियों तक याद रखा जाएगा। सात स्वर्ण और तीन रजत पदक केवल धातु के टुकड़े नहीं हैं बल्कि यह भारतीय मुक्केबाजी की नई पहचान हैं। यह उस नए भारत की गूंज है जो विश्व पटल पर अब किसी से कमतर नहीं है। इन खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत से साबित कर दिया है कि अगर सही दिशा में ईमानदारी से प्रयास किया जाए तो कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। अब निगाहें आगामी विश्व चैंपियनशिप और ओलंपिक खेलों पर टिकी होंगी। ग्लासगो की इस स्वर्णिम सफलता ने देशवासियों की उम्मीदों को आसमान पर पहुंचा दिया है और यह पूरी तरह से तय है कि हमारे मुक्केबाज आने वाली चुनौतियों के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। भारतीय मुक्केबाजी का यह स्वर्णिम युग अभी बस शुरू ही हुआ है और आने वाले समय में यह खेल दुनिया भर में भारत का नाम और भी रोशन करेगा।

पंजाब कांग्रेस का घमासान और चुनावी समीकरण

अशोक भाटिया

पंजाब कांग्रेस में जारी अंदरूनी घमासान खुली बगावत और शक्ति-प्रदर्शन का मैदान बन चुका है। आगामी विधानसभा चुनावों से ठीक पहले पार्टी के भीतर मचे इस घमासान ने केंद्रीय आलाकमान की चिंताओं को बढ़ा दिया है। पंजाब कांग्रेस प्रभारी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव भूपेश बघेल की मौजूदगी में संगरूर और पटियाला में हुई हालिया हिंसक झड़पें, नारेबाजी और हाथापाई ने यह साबित कर दिया है कि पार्टी के भीतर दरारें बहुत गहरी हो चुकी हैं। यह आलेख पंजाब कांग्रेस के इस मौजूदा संकट, इसके मुख्य चेहरों, विपक्षी दलों के रुख, भूपेश बघेल की रिपोर्ट और आगामी चुनावी समीकरणों पर इसके असर का विस्तृत विश्लेषण करता है।

पंजाब में कांग्रेस का यह संकट नया नहीं है, लेकिन हालिया सांगठनिक फेरबदल के बाद इसने तीव्र रूप अख्तियार कर लिया है। पार्टी के भीतर मुख्य मुकाबला दो धड़ों के बीच है। एक तरफ अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग (प्रदेश अध्यक्ष) का गुट है, जिन्हें दिल्ली आलाकमान का खुला समर्थन हासिल है। दूसरी तरफ चरणजीत सिंह चन्नी (पूर्व मुख्यमंत्री और सांसद) का गुट है, जो वर्तमान नेतृत्व को हटाने और चन्नी को कमान सौंपने की मांग पर अड़ा है। यह विवाद उस समय पूरी तरह सार्वजनिक हो गया जब पंजाब प्रभारी भूपेश बघेल राज्य के संगठनात्मक दौरे पर आए थे। पटियाला और संगरूर की बैठकों में जैसे ही राजा वड़िंग ने बोलना शुरू किया, चन्नी समथर्कों ने ह्वचन्नी लाओ, पंजाब बचाओह्व के नारे लगाने शुरू कर दिए। बात इतनी ज्यादा बढ़ गई कि दोनों गुटों के कार्यकर्ता आपस में भिड़ गए, धक्का-मुक्की हुई और प्रभारी मूकदर्शक बनकर देखते रह गए।

इस घमासान के पीछे केवल व्यक्तिगत वर्चस्व की लड़ाई नहीं है, बल्कि इसके गहरे राजनीतिक आयाम भी हैं। चन्नी खेमे का आरोप है कि राजा वड़िंग की कायर्शैली तानाशाही पूर्ण है और वे पुराने वरिष्ठ नेताओं को दरकिनार कर रहे हैं। आलाकमान द्वारा वरिष्ठ नेता मदन लाल जलालपुर को निलंबित किए जाने के बाद चरणजीत सिंह चन्नी ने सीधे उनके घर जाकर मुलाकात की। यह कदम सीधे तौर पर प्रदेश अध्यक्ष राजा वड़िंग को एक खुली राजनीतिक चुनौती थी। इसके साथ ही मुख्यमंत्री पद के चेहरे को लेकर भी जंग जारी है। आगामी विधानसभा चुनावों के लिए चन्नी गुट चाहता है कि पार्टी अभी से मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करे, जबकि भूपेश बघेल ने स्पष्ट कर दिया है कि चुनाव से पहले चेहरा घोषित नहीं किया जाएगा और पार्टी सामूहिक नेतृत्व में ही चुनाव लड़ेगी। राजा वड़िंग द्वारा दिए गए कुछ बयानों (जैसे पूर्व केंद्रीय मंत्री बूटा सिंह के रंग पर की गई टिप्पणी) ने भी आग में घी का काम किया, जिसके लिए बाद में उन्हें बिना शर्त माफी भी मांगनी पड़ी थी।

पंजाब कांग्रेस का इतिहास लगभग आठ दशकों से आंतरिक गुटबाजी का रहा है। 2021 में कैप्टन अमरिंदर सिंह बनाम नवजोत सिंह सिद्धू विवाद को पूरी दुनिया ने देखा था, जिसके कारण 2022 के चुनावों में कांग्रेस मात्र 18 सीटों पर सिमट गई थी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार स्थिति और भी ज्यादा गंभीर है। पिछली बार जब विवाद हुआ था तब कांग्रेस सत्ता में थी, तो मुख्यमंत्री की कुर्सी दांव पर लगी थी। इस बार पार्टी विपक्ष में है और लड़ाई इस बात की चल रही है कि पार्टी के पुनरुद्धार का श्रेय किसे मिले। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे का केंद्रीय नेतृत्व राजा वड़िंग को हटाकर राष्ट्रीय स्तर पर एक और गलत संदेश नहीं देना चाहता, क्योंकि इससे बगावत की एक नई परंपरा शुरू हो सकती है।

पंजाब कांग्रेस के इस खुले ड्रामे पर भारतीय जनता पार्टी ने बेहद आक्रामक और रणनीतिक रुख अपनाया है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पंजाब कांग्रेस के इस संकट पर तीखा कटाक्ष करते हुए आरोप लगाया कि यह लड़ाई पंजाब के भविष्य की नहीं, बल्कि केवल और केवल कुर्सी की है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कांग्रेस की इस अंतर्कलह को लेकर राहुल गांधी की ह्वमोहब्बत की दुकानह्व के नारे पर निशाना साधा और दावा किया कि जो पार्टी अपने नेताओं को नहीं संभाल सकती, वह राज्य क्या संभालेगी। इसके साथ ही, पंजाब भाजपा प्रवक्ता सरचंद सिंह ने आरोप लगाया कि राजा वड़िंग के कुछ बयान सिख अस्मिता और पगड़ी का अपमान हैं। भाजपा खुद को राज्य में एकमात्र स्थिर और अनुशासित विकल्प के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रही है।

पंजाब की सत्ताधारी आम आदमी पार्टी के लिए कांग्रेस का यह संकट एक बड़ी राजनीतिक ढाल बनकर उभरा है। वतर्मान मुख्यमंत्री और ह्वआपह्व के नेता इस कलह का इस्तेमाल अपनी प्रशासनिक नाकामियों (जैसे कानून व्यवस्था और विकास कार्यों की धीमी गति) से जनता का ध्यान भटकाने के लिए कर रहे हैं। ह्वआपह्व प्रवक्ताओं का तर्क है कि कांग्रेस कभी भी पंजाब की भलाई नहीं सोच सकती क्योंकि उसके नेता केवल अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लगे हैं। वे जनता के सामने यह नैरेटिव सेट कर रहे हैं कि विपक्ष पूरी तरह बिखर चुका है, इसलिए राज्य में केवल आम आदमी पार्टी ही स्थिर सरकार दे सकती है। दूसरी तरफ, शिरोमणि अकाली दल (रअऊ), जो इस समय पंजाब की राजनीति में अपनी खोई हुई जमीन वापस पाने के लिए संघर्ष कर रहा है, कांग्रेस के इस संकट को बेहद बारीकी से देख रहा है। अकाली दल ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि यह वही गुटबाजी है जिसने पहले पंजाब को बर्बाद किया और आज भी कांग्रेस के पास पंजाब के किसानों, युवाओं और सिखों के मुद्दों के लिए कोई ठोस नीति नहीं है। अकाली दल इस कलह के जरिए कांग्रेस के पारंपरिक सिख और ग्रामीण वोट बैंक में सेंध लगाने की कोशिश कर रहा है।

पंजाब कांग्रेस के प्रभारी भूपेश बघेल के सामने जिस तरह की अनुशासनहीनता और धक्का-मुक्की हुई, उसने आलाकमान को बेहद कड़ा रुख अपनाने पर मजबूर कर दिया है। बघेल ने इस पूरे घटनाक्रम और दोनों गुटों के दावों-प्रतिदावों को लेकर अपनी एक विस्तृत रिपोर्ट कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी को सौंपने की तैयारी कर ली है। प्रभारी भूपेश बघेल ने अपनी बैठकों के दौरान ही साफ कर दिया था कि पार्टी के भीतर किसी भी तरह की अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उनकी रिपोर्ट में उन स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं को चिन्हित किया गया है जिन्होंने सार्वजनिक रूप से बैठकों में हंगामा किया और हाथापाई की। आलाकमान इन नेताओं पर निलंबन या कारण बताओ नोटिस जैसी सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई कर सकता है। बघेल ने पंजाब दौरे के समय स्पष्ट कर दिया था कि साल 2027 के विधानसभा चुनावों से पहले किसी भी मुख्यमंत्री पद के चेहरे की घोषणा नहीं की जाएगी। आलाकमान इस स्टैंड पर अडिग रहने वाला है, ताकि चरणजीत सिंह चन्नी और राजा वड़िंग के बीच चल रही ह्वचेहरे की रेसह्व को जबरन रोका जा सके और पार्टी सामूहिक नेतृत्व में चुनाव मैदान में उतरे। आलाकमान दोनों गुटों के शीर्ष नेताओं को दिल्ली तलब कर सकता है। खड़गे और राहुल गांधी दोनों पक्षों को कड़ी चेतावनी दे सकते हैं कि यदि आपसी सिरफुटव्वल नहीं रुकी, तो पार्टी में बड़े सांगठनिक फेरबदल से भी गुरेज नहीं किया जाएगा। चन्नी गुट की बगावत को शांत करने के लिए उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर कोई बड़ी जिम्मेदारी या पंजाब चुनाव प्रबंधन समिति में महत्वपूर्ण पद देकर संतुलित करने का प्रयास किया जा सकता है। राजा वड़िंग को पद से हटाने की चन्नी गुट की मांग को आलाकमान सीधे तौर पर स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि इससे पार्टी कमजोर दिखेगी। हालांकि, नाराजगी दूर करने के लिए कायर्कारी अध्यक्षों की नियुक्ति या जिला स्तर के अध्यक्षों के चयन में चन्नी समथर्कों को तरजीह दी जा सकती है।

पंजाब कांग्रेस की इस अंतर्कलह का राज्य के आगामी राजनीतिक और चुनावी समीकरणों पर बहुत गहरा और दूरगामी असर पड़ने वाला है। चरणजीत सिंह चन्नी पंजाब के एक बड़े दलित चेहरे हैं। यदि चन्नी को इसी तरह दरकिनार किया जाता रहा, तो कांग्रेस का मजबूत माना जाने वाला दलित वोट बैंक (जो पंजाब की आबादी का लगभग 32% है) पार्टी से छिटक सकता है। इस बिखरे हुए वोट बैंक को साधने के लिए भाजपा और ह्वआपह्व दोनों ही पूरी ताकत लगा रहे हैं। पंजाब की राजनीति अब द्विपक्षीय (कांग्रेस बनाम अकाली दल) नहीं रही। अब मैदान में कांग्रेस, ह्वआपह्व, भाजपा और अकाली दल चारों मौजूद हैं। कांग्रेस के भीतर की कमजोरी सीधे तौर पर अन्य तीन दलों को बढ़त देती है। विशेष रूप से भाजपा, जो राज्य में अपने दम पर पैर पसारने की कोशिश कर रही है, कांग्रेस के असंतुष्ट नेताओं और मतदाताओं को अपनी ओर खींच सकती है। किसी भी चुनाव को जीतने के लिए जमीनी कार्यकर्ताओं का एकजुट होना सबसे जरूरी है। शीर्ष नेतृत्व के बीच जारी इस सिरफुटव्वल से बूथ स्तर का कार्यकर्ता असमंजस और हताशा में है, जिससे चुनाव के दौरान पार्टी का प्रचार तंत्र कमजोर पड़ सकता है। इस कलह ने विपक्षी दलों को बैठे-बिठाए एक मजबूत चुनावी मुद्दा दे दिया है। चुनाव प्रचार के दौरान ह्वआपह्व और भाजपा विकास के मुद्दों के बजाय कांग्रेस की अस्थिरता को मुख्य मुद्दा बनाकर जनता के बीच जाएंगे, जिससे कांग्रेस को रक्षात्मक मुद्रा में आना पड़ेगा।

पंजाब कांग्रेस का यह आंतरिक युद्ध ऐसे समय में हो रहा है जब राज्य की जनता बदलाव और स्थिरता की उम्मीद कर रही है। विपक्ष में होने के नाते यह समय कांग्रेस के लिए सत्ता विरोधी लहर का फायदा उठाने और अपनी जमीन मजबूत करने का था, लेकिन आपसी कलह ने उसके सारे समीकरण बिगाड़ दिए हैं। भूपेश बघेल की रिपोर्ट और उसके बाद आलाकमान द्वारा उठाए जाने वाले कदम ही अब यह तय करेंगे कि पंजाब में कांग्रेस एकजुट होकर लड़ पाएगी या एक बार फिर 2022 की तरह बिखर जाएगी। विरोधी ताकतें इस राजनीतिक कमजोरी का पूरा फायदा उठाने के लिए तैयार बैठी हैं, जिससे आगामी चुनावों में कांग्रेस को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है।

एक कलाकार से कहीं बड़ा बन गया एक नाम – किशोर कुमार

कृति आरके जैन

समय बहुत कुछ छीन लेता है, लेकिन कुछ स्वर उसकी पकड़ से बाहर रह जाते हैं। वे उम्र नहीं गिनते, पीढ़ियाँ जोड़ते हैं। जब भी वे सुनाई देते हैं, मन के बंद दरवाजे बिना आहट खुलने लगते हैं। किशोर कुमार उसी विरल परंपरा के कलाकार हैं। 4 अगस्त 1929 को खंडवा में जन्मे आभास कुमार गांगुली ने संगीत को केवल मनोरंजन नहीं रहने दिया; उसे मनुष्य की निजी स्मृतियों का सबसे विश्वसनीय साथी बना दिया। उनकी जयंती इसलिए याद रहती है क्योंकि यह उस आवाज का दिन है जिसने हँसी को भी सुर दिया और पीड़ा को भी गरिमा। उनके स्वर में जीवन के लगभग सभी रंग बसते थे। इसलिए उनका हर गीत सुनते ही बीता हुआ समय अनायास वर्तमान में लौट आता है।

बड़े कलाकार जन्म से नहीं, साधना से पहचान पाते हैं। खंडवा के आभास कुमार गांगुली की यात्रा भी ऐसी ही थी। पिता कुंजीलाल गांगुली वकील थे, बड़े भाई अशोक कुमार सिनेमा में स्थापित। उनके बुलावे पर वे मुंबई पहुँचे। शिकारी से अभिनय शुरू हुआ, पर मन गायकी में रमा। संगीत की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली; सुनना, आत्मसात करना और स्वर देना ही उनकी साधना थी। आरंभ में केएल सहगल का प्रभाव रहा, लेकिन जल्द ही उन्होंने अपनी अलग पहचान बना ली। ज़िद्दी का ह्वमरने की दुआएँ क्यों माँगूँ पहली बड़ी पहचान बना। फिर 1969 में आराधना ने इतिहास रच दिया। मेरे सपनों की रानी और रूप तेरा मस्ताना ने सिद्ध किया कि कई बार नायक से पहले उसकी आवाज लोगों के दिलों पर राज करती है।

जब कोई कलाकार भावनाओं की भाषा बन जाता है, तब उसके गीत समय की सीमा नहीं मानते। किशोर कुमार के लिए सत्तर का दशक ऐसा ही स्वर्णकाल था। चिंगारी कोई भड़के में विरह की आँच है, ये शाम मस्तानी में जीवन की खुली मुस्कान, ये जो चिलमन है में चंचल शरारत और ज़िंदगी के सफ़र में में समय का निर्विकार सत्य। मेरे सामने वाली खिड़की में यह साबित करता है कि हँसी भी उतनी ही गहरी कलात्मक अभिव्यक्ति हो सकती है जितनी करुणा। लगभग सत्ताईस सौ गीतों का उनका संसार केवल उपलब्धि नहीं, भारतीय संवेदनाओं का जीवित अभिलेख है। प्रेम, पीड़ा, मस्ती, दर्शन, आशा और निराशा—मानवीय अनुभव का शायद ही कोई रंग हो जिसे उनकी आवाज ने स्पर्श न किया हो।

बहुत कम आवाजें चेहरों नहीं, व्यक्तित्वों की पहचान बनती हैं। किशोर कुमार का स्वर किसी एक नायक तक सीमित नहीं रहा। राजेश खन्ना की रोमानी आभा, अमिताभ बच्चन का तेज, देव आनंद की चपलता और धर्मेंद्र की देसी सहजता—हर रूप में सहज ढल गया। आर.डी. बर्मन के साथ उनकी जुगलबंदी ने हिंदी फिल्म संगीत को नई ऊँचाइयाँ दीं। दम मारो दम, जाने जाँ ढूँढ़ता फिर रहा और चुरा लिया है तुमने ने युवाओं की धड़कनों को नई लय दी। एसडी बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल और कल्याणजी-आनंदजी के साथ उन्होंने अनगिनत कालजयी गीत रचे। हमें तुमसे प्यार कितना, हाय रे वो दिन क्यों न आए और खाइके पान बनारस वाला बताते हैं कि उनकी आवाज हर भाव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी।

कुछ लोग अपनी कला से पहचाने जाते हैं, कुछ अपनी कला की सीमाएँ तोड़कर। किशोर कुमार दूसरी श्रेणी के कलाकार थे। गायकी उनकी पहचान अवश्य बनी, पर अभिनेता, संगीतकार, गीतकार और फिल्मकार के रूप में भी उन्होंने झुमरू, दूर गगन की छाँव में और दूर का राही जैसी फिल्मों से गहरी मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी। दूर गगन की छाँव में आज भी एक सैनिक के मन की सबसे मार्मिक सिनेमाई अभिव्यक्तियों में गिनी जाती है। कला के सम्मान पर समझौता उन्हें स्वीकार नहीं था। पारिश्रमिक न मिलने पर आधा मेकअप लगाकर सेट पर पहुँचना या आधा गीत छोड़ देना इसी स्वाभिमान की मिसाल था।

हर मधुर स्वर अपने हिस्से की खामोशी भी ढोता है। किशोर कुमार का जीवन भी इससे अछूता नहीं रहा। रुमा गुहा ठाकुरता, मधुबाला, योगिता बाली और लीना चंदावरकर के साथ उनके चार विवाह हुए, पर मधुबाला का साथ हिंदी सिनेमा की सबसे मार्मिक प्रेमकथाओं में गिना जाता है। उनकी बीमारी और असमय निधन ने किशोर कुमार को भीतर तक बदल दिया। उस दर्द की प्रतिध्वनि उनके अनेक दर्दभरे गीतों में महसूस होती है। 13 अक्टूबर 1987 को मात्र अट्ठावन वर्ष की आयु में हृदयाघात ने उनकी जीवन-यात्रा थाम दी। अंतिम इच्छा के अनुसार उनका पार्थिव शरीर खंडवा लाया गया। वे लौट तो अपनी जन्मभूमि आए, पर भारतीय संगीत में जो सन्नाटा छोड़ गए, वह आज भी वैसा ही गूँजता है।

लोकप्रियता समय के साथ धुंधली पड़ सकती है, लेकिन सच्ची कला हर दौर की कसौटी पर और अधिक उजली होकर लौटती है। किशोर कुमार की आवाज इसका जीवंत प्रमाण है। जीवन के सफ़र में राही आज भी आगे बढ़ने का विश्वास जगाता है, जबकि कुछ तो लोग कहेंगे समाज की रूढ़ मानसिकता पर आज भी उतनी ही पैनी चोट करता है। यही उनकी कला की सबसे बड़ी विजय है कि उनके गीत मनोरंजन की सीमाएँ लाँघकर जीवन-दृष्टि का हिस्सा बन गए। इसलिए उनकी आवाज हर पीढ़ी में नए अर्थ, नई आत्मीयता और नई प्रासंगिकता के साथ सुनाई देती है।

समय अंततः उसी कला के आगे ठहरता है, जिसमें मनुष्य अपने जीवन का अक्स पहचान ले। किशोर कुमार की विरासत इसी सत्य की साक्षी है। खंडवा से निकला उनका स्वर अमरता तक इसलिए पहुँचा क्योंकि उसमें बनावट नहीं, सच्चाई थी; प्रदर्शन नहीं, संवेदना थी। उन्होंने सिद्ध किया कि सच्ची कला हर दौर में नए अर्थों के साथ जीवित रहती है। जब तक किसी उत्सव में उनके गीत मुस्कान बनकर गूँजेंगे, किसी अकेले मन को उनका स्वर संबल देगा, किसी प्रेम में उनकी धुन धड़केगी।

अगले साल होने वाले वनडे विश्वकप के वेन्यू घोषित

दक्षिण अफ्रीका में आठ स्थलों पर होंगे मैच

मुंबई (ए)। दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया की मेजबानी में होने वाले 2027 वनडे विश्व कप के लिए 12 वेन्यू तय कर लिए गए हैं। सह-मेजबान दक्षिण अफ्रीका के आठ स्टेडियम इन खेलों की मेजबानी करेंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। यह प्रतिष्ठित 50 ओवर का टूर्नामेंट 24 साल बाद दक्षिण अफ्रीका में वापसी कर रहा है। इससे पहले 2003 में दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और केन्या ने आखिरी पुरुष क्रिकेट विश्व कप की मेजबानी की थी। जोहान्सबर्ग में आयोजित एक भव्य समारोह में दक्षिण अफ्रीका के आठ शहरों, जिम्बाब्वे के तीन शहरों और नामीबिया की राजधानी विंडहोक को टूर्नामेंट के सह-मेजबान के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस मौके पर दक्षिण अफ्रीका के दिग्गज क्रिकेटर ग्रीम स्मिथ, मखाया एनटिनी, हाशिम अमला, टेम्बा बावुमा और [illegible] के अलावा जिम्बाब्वे के [illegible] और नामीबिया के [illegible] भी मौजूद थे।

किस देश के कितने वेन्यू

दक्षिण अफ्रीका के आठ शहर, जिम्बाब्वे के तीन और नामीबिया का एक शहर अगले साल होने वाले इस वैश्विक टूर्नामेंट के मुकाबलों की मेजबानी करेंगे।

दक्षिण अफ्रीका के इन स्टेडियम में होंगे मैच

वांडरर्स स्टेडियम (जोहान्सबर्ग),
सुपरस्पोर्ट पार्क, सेंचुरियन (प्रिटोरिया),
न्यूलैंड्स क्रिकेट ग्राउंड (केपटाउन),
किंग्समीड क्रिकेट ग्राउंड (डरबन),
सेंट जॉर्ज पार्क (गकेबेरहा),
बफेलो पार्क (ईस्ट लंदन),
मैंगाउंग ओवल (ब्लोमफोंटेन),
बोलैंड पार्क (पार्ल)
[illegible] पार्क ([illegible] सिटी)

जिम्बाब्वे के तीन शहर करेंगे मेजबानी

हरारे स्पोर्ट्स क्लब (हरारे)
क्वींस स्पोर्ट्स क्लब (बुलावायो)
[illegible] अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम (विक्टोरिया फॉल्स)

नामीबिया: नामीबिया क्रिकेट ग्राउंड (विंडहोक)

आईसीसी अध्यक्ष जय शाह ने कहा, 24 साल बाद इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट की दक्षिण अफ्रीका में वापसी क्रिकेट के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। हमें पूरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे और नामीबिया एक शानदार आयोजन करेंगे, जो उस [illegible] और समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करेगा जो इस खेल को [illegible] बनाती है।

नए प्रारूप में होगा टूर्नामेंट

आईसीसी पुरुष क्रिकेट विश्व कप 2027 में 37 मुकाबले खेले जाएंगे। टूर्नामेंट में अधिक प्रतिस्पर्धा और रोमांच लाने के लिए तीन चरणों वाला नया प्रारूप अपनाया गया है। सबसे पहले सुपर सीरीज खेली जाएगी जिसमें रैंकिंग में 12वें से 14वें स्थान पर रहने वाली तीन टीम राउंड-रॉबिन प्रारूप में आमने-सामने होंगी। इसमें विजेता टीम अगले चरण में पहुंचेगी। इसके बाद 12 टीम के बीच 30 मैच का चरण होगा। टीमों को छह-छह टीम के दो ग्रुप में बांटा जाएगा और दोनों ग्रुप में राउंड-रॉबिन आधार पर मुकाबले होंगे। प्रत्येक ग्रुप की शीर्ष तीन टीमें, साथ ही दोनों ग्रुप में चौथे स्थान पर रहने वाली टीम में से बेहतर प्रदर्शन करने वाली एक टीम सुपर-7 चरण में पहुंचेगी। सुपर-7 चरण में कुल 21 राउंड-रॉबिन मैच खेले जाएंगे। इसके बाद शीर्ष चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। सेमीफाइनल में सुपर-7 में शीर्ष पर रहने वाली टीम का मुकाबला चौथे स्थान की टीम से होगा जबकि दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वाली टीमें दूसरे सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगी।

5 साल के वैभव सूर्यवंशी को उपकप्तान बनाने पर भड़के हर्षा भोगले

मुंबई। दलीप ट्रॉफी 2026-27 के लिए ईस्ट जोन की टीम में 15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी को उपकप्तान बनाए जाने का फैसला चर्चा का विषय बन गया है। युवा बल्लेबाज को ईशान किशन की कप्तानी वाली टीम का उपकप्तान बनाए जाने पर कई पूर्व क्रिकेटरों और विशेषज्ञों ने हैरानी जताई है। मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर हर्षा भोगले भी इस फैसले से सहमत नजर नहीं आए। हर्षा भोगले ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि वैभव सूर्यवंशी को रेड-बॉल टीम का उपकप्तान बनाने के पीछे क्या सोच रही होगी। उन्होंने 12 पारियों में 17.25 की औसत से 207 रन बनाए हैं। उनकी प्रतिभा असाधारण है, लेकिन रेड-बॉल क्रिकेट में अभी उनके सीखने की शुरुआत ही हुई है। वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर तेजी से पहचान बनाई है। हालांकि प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उनका अनुभव अभी काफी कम है। उन्होंने अब तक आठ प्रथम श्रेणी मैचों में 207 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका सर्वोच्च स्कोर 93 रन रहा है। ऐसे में दलीप ट्रॉफी जैसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में उन्हें उपकप्तानी सौंपने के फैसले पर सवाल उठ रहे हैं। ईस्ट जोन टीम की कमान विकेटकीपर-बल्लेबाज ईशान किशन को सौंपी गई है, जबकि वैभव सूर्यवंशी उपकप्तान होंगे। चयनकर्ता [illegible] में वैभव के अनुभवी [illegible] अभिमन्यु ईश्वरन के साथ पारी की शुरुआत करने की उम्मीद है।

कॉमनवेल्थ में जूडो में 15 मिनट में अस्मिता-हर्ष गोल्ड जीते

जेवलिन में नीरज को सिल्वर और यशवीर को ब्रॉन्ज, भारत को कल 6 मेडल मिले

नई दिल्ली (ए)। कॉमनवेल्थ गेम्स में शुक्रवार को भारत ने शानदार प्रदर्शन किया। अस्मिता डे ने गेम्स के इतिहास में जूडो में देश को पहला गोल्ड दिलाया। इसके 15 मिनट बाद हर्ष सिंह ने दूसरा गोल्ड जीता। [illegible] ने सिल्वर मेडल हासिल किया। जूडो में 3 मेडल आए। देश के स्टार जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने सिल्वर मेडल जीता। उन्होंने 85.83 मीटर थ्रो किया। भारत के ही यशवीर सिंह ने 85.41 मीटर का शानदार थ्रो प्रदर्शन करते हुए ब्रॉन्ज मेडल जीता। श्रीलंका के [illegible] ने 88.75 मीटर थ्रो के साथ गोल्ड मेडल हासिल किया।

[illegible]

वेटलिफ्टिंग में मेडल लाने वाले ... पहले भारतीय

[illegible]

जेवलिन में भारत के दो मेडल, नीरज गोल्ड से चूके

नीरज चोपड़ा ने 85.83 मीटर [illegible]

भारत के बांग्लादेश दौरे पर सस्पेंस बरकरार, बीसीबी चीफ तमीम इकबाल ने सरकार से मदद मांगी

कहा- विदेश मंत्रालय भारत से बातचीत करे

ढाका। भारत और बांग्लादेश के बीच सितंबर में होने वाली सीरीज पर सस्पेंस बरकरार है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के प्रेसिडेंट तमीम इकबाल ने अब सरकार से गुहार लगाई है कि वह भारत से बात करे। [illegible]

ऋषभ पंत ने एमएस धोनी के साथ ट्रेनिंग की, रांची में श्रीलंका टेस्ट सीरीज से पहले जिम में साथ दिखे दोनों खिलाड़ी

नई दिल्ली। भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत श्रीलंका के खिलाफ होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज की तैयारी में जुट गए हैं। [illegible]

[illegible]

यूएई अंडर-19 विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई

मलेशिया को 1 रन से हराकर जगह बनाई, 2027 में होगा अगला एडिशन

नई दिल्ली। यूएई महिला क्रिकेट टीम ने मेजबान मलेशिया को 1 रन से हराकर ICC अंडर-19 विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफाई कर लिया। [illegible]

बुमराह पूरी तरह फिट, श्रीलंका के खिलाफ दोनों टेस्ट खेलने की मिली मंजूरी

बेंगलुरु। भारतीय क्रिकेट टीम को श्रीलंका दौरे से पहले बड़ी राहत मिली है। [illegible]

विश्वकप के मुनाफे के निजीकरण पर यू-टर्न, विरोध के बाद फीफा अध्यक्ष इनफैनटिनो ने वापस लिया प्रस्ताव

[illegible]

[illegible]

दक्षिण ... ने भी दिया इस्तीफा

[illegible]

इनफैनटिनो बोले-फुटबॉल को बांटना नहीं, जोड़ना चाहते हैं

[illegible]

दंगल गर्ल ने किया शॉकिंग खुलासा

एक सीन की वजह से डायरेक्टर से भिड़ गई थीं सान्या मल्होत्रा

सुपरस्टार आमिर खान की ऑल टाइम ब्लॉकबस्टर फिल्म दंगल से फैंस के दिलों में अपनी पहचान बनाने वालीं अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा के बारे में कौन नहीं जानता। अपने बिंदास अंदाज के लिए मशहूर सान्या ने हाल ही में एक बड़ा खुलासा किया है। सान्या मल्होत्रा ने बताया कि एक सीन के चलते वह फिल्म के डायरेक्टर के साथ ही लड़ बैठ थीं। सही बात कहने से डरना नहीं चाहिए, फिर चाहे जगह कोई भी हो। दंगल और बधाई हो फिल्मों की अभिनेत्री अभिनेत्री सान्या मल्होत्रा भी ऐसी हैं। वह कहती हैं– मैं मेहनत कर रही हूं। अपना सपना जी रही हूं। एक्टर बनना चाहती थी, वो भी बन गई। मैं अपने कलाकार होने के इस मंच का प्रयोग बहुत सही तरह से कर रही हूं। महिलाओं को पर्दे पर सही तरीके से दिखाना चाहती हूं।मुझे दंगल, मिसेज जैसी और फिल्में करके खुद को और महिलाओं को सशक्त बनाना है। उन्हें स्क्रीन पर सही तरह से दिखाना है। एक बार सेट पर मुझे एक सीन पसंद नहीं आ रहा था। मेरी फिल्म के लिए निर्देशक के साथ लड़ाई हुई कि यह स्क्रीन पर सही नहीं लगेगा, आप महिलाओं को ऐसे नहीं दिखा सकते हैं। हिंदी सिनेमा में कई बार ऐसा हो जाता है कि निर्देशक कुछ ऐसे सीन रख देते हैं, जो दर्शकों से कनेक्ट करे। जबकि उसमें कोई तर्क नहीं था।मुझसे उस निर्देशक ने कहा कि आप काफी मुखर हैं। हालांकि, आगे चलकर उस सीन को ट्रोल किया गया, जिस पर मैंने आपत्ति जताई थी। मुझे जो सही नहीं लगता है, मैं तो बोल देती हूं।

ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर 'जन नायकन' का कब्जा, संडे को आया कमाई का बवंडर

अब जन नायकन का टोटल वर्ल्डवाइड कलेक्शन 295 करोड़ के पार पहुंच गया है और जल्द ही ये फिल्म 300 करोड़ का आंकड़ा पार करती हुई नजर आएगी। अगर ऐसा होता है तो जन नायकन विजय थलापति की एक्टिंग करियर की तीसरी ऐसी फिल्म बन जाएगी, जो दुनियाभर में 300 करोड़ का कारोबार करेगी। इससे पहले विजय की लियो और गॉट ने ये कारनामा किया है। जिन्होंने क्रमश- 620 करोड़ और 458 करोड़ का वर्ल्डवाइड कलेक्शन किया था। अब देखना ये होगा कि कितनी जल्दी ये साउथ फिल्म ये कारनामा करती है।

बीते दिनों सिनेमाघरों से लेकर बॉक्स ऑफिस तक अगर किसी भारतीय फिल्म का दबदबा देखने को मिल रहा है तो उसमें साउथ सुपरस्टार विजय थलापति स्टारर फिल्म जन नायकन का नाम शामिल है। पॉलिटिकल ड्रामा थ्रिलर इस मूवी ने अपनी शानदार कहानी से दर्शकों का दिल जीता है। यही कारण है कि देश के अलावा विदेशों में भी जन नायकन धमाकेदार कमाई करती हुई नजर आ रही है। रिलीज के 11वें दिन जन नायकन के वर्ल्डवाइड कलेक्शन में बंपर उछाल दर्ज किया गया है। आइए जानते हैं कि फिल्म का अब तक कारोबार कितना हुआ है–

अक्सर देखा जाता है कि वीकेंड पर फिल्मों की कमाई में मोटा इजाफा होता है। जन नायकन के मामले में भी ऐसा ही कुछ देखने को मिला है। रविवार की छुट्टी का विजय की जन नायकन को पूरा फायदा मिला है और मूवी ने अच्छा कारोबार करके दिखाया है। गौर किया जाए जन नायकन के रिलीज के 11वें दिन के वर्ल्डवाइड कलेक्शन की तरफ तो वह 12 करोड़ से अधिक रहा है। इसके साथ ही अब जन नायकन का टोटल वर्ल्डवाइड कलेक्शन 295 करोड़ के पार पहुंच गया है और जल्द ही ये फिल्म 300 करोड़ का आंकड़ा पार करती हुई नजर आएगी। अगर ऐसा होता है तो जन नायकन विजय थलापति की एक्टिंग करियर की तीसरी ऐसी फिल्म बन जाएगी, जो दुनियाभर में 300 करोड़ का कारोबार करेगी। इससे पहले विजय की लियो और गॉट ने ये कारनामा किया है। जिन्होंने क्रमश- 620 करोड़ और 458 करोड़ का वर्ल्डवाइड कलेक्शन किया था। अब देखना ये होगा कि कितनी जल्दी ये साउथ फिल्म ये कारनामा करती है। पिछले तीन दिनों में जन नायकन ने कमाई के मामले में जमकर गर्दा उड़ाया है। गौर किया जाए दूसरे वीकेंड में शुक्रवार से लेकर रविवार तक जन नायकन की वर्ल्डवाइड कमाई की तरफ तो आंकड़ा 25 करोड़ से अधिक रहा है। स्पाइडर–मैन ब्रांड न्यू डे जैसी बड़ी फिल्म की रिलीज के बाद भी अगर जन नायकन इतना कारोबार कर पाई है, तो ये वाकई काबिल–ए–तारीफ है।

इंडिया में आया स्पाइडरमैन का तूफान! चार दिन में छापे 300 करोड़

पीटर पार्कर की कहानी दुनियाभर में तो देखी जा रही है. लेकिन इंडिया में जो क्रेज इसे देखने के लिए नजर आया है, वो सचमुच हैरान करने वाली बात है. बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्म जिस तरह से दौड़ रही है, ये कह पाना मुश्किल नहीं कि बहुत जल्द टॉम हॉलैंड का स्पाइडरमैन इंडिया में सबसे ज्यादा कमाई करने वाला सुपरहीरो बनेगा.मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स का सबसे पॉपुलर और सबसे ज्यादा प्यार पाने वाला स्पाइडरमैन इस समय इंडिया में जो कहर बरपा रहा है, उसकी उम्मीद शायद ही किसी फिल्म प्रेमी ने की होगी. इस फिल्म को कई लोग पसंद करते हैं, ये तो सब जानते हैं. लेकिन इसे थिएटर्स में देखने का ऐसा क्रेज लोगों में उमड़ पड़ेगा, ये पिक्चर बनाने वालों ने भी नहीं सोचा होगा. खासतौर से इंडिया में. टॉम हॉलैंड वाली स्पाइडरमैन ब्रैंड न्यू डे इंडिया में जिस हिसाब से कमाई कर रही है, वो सचमुच चौंका देने वाले आंकड़े हैं. पहले ही दिन इस फिल्म ने रुष्ट की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर मूवी एवेंजर्स एंडगेम का रिकॉर्ड तोड़ा. इंडिया में इसने 60 करोड़ रुपये से ज्यादा का नेट कलेक्शन किया. फिर दो दिनों के अंदर स्पाइडरमैन ने इंडियन बॉक्स ऑफिस पर 100 करोड़ रुपये से ज्यादा का नेट कलेक्शन किया. जबकि वो दो दिन कामकाजी वाले थे.

हालांकि असली धमाका शनिवार–रविवार को हुआ. स्पाइडरमैन ब्रैंड न्यू डे ने अपने तीसरे दिन 70 करोड़ रुपये से ज्यादा कमाए और तीन दिनों में इसकी कमाई 180 करोड़ रुपये नेट के पास पहुंच गई. अब सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार, चौथा दिन यानी संडे पिछले सभी दिनों से कई गुना बड़ा साबित हुआ।

दूसरी शादी के बाद जेनिफर विंगेट ने शेयर की हल्दी की तस्वीरें

टीवी एक्ट्रेस जेनिफर विंगेट ने 16 जुलाई 2026 को यूनाइटेड किंगडम में सिंगापुर के बिजनेसमैन विलियम इश्माएल संग शादी की थी. इस शादी में सिर्फ परिवार के सदस्य और करीबी दोस्त ही शामिल हुए थे. अब शादी के कुछ दिनों बाद उन्होंने अपनी हल्दी सेरेमनी की अनदेखी तस्वीरें शेयर की हैं.फ्रेंडशिप डे के मौके पर जेनिफर ने सोशल मीडिया पर एक इमोशनल पोस्ट शेयर करते हुए अपने खास दोस्तों के साथ बिताए यादगार पलों की झलक दिखाई. तस्वीरों में करण वाही, हरलीन सेठी और बाकी लोग हल्दी फंक्शन को खुलकर एन्जॉय करते नजर आ रहे हैं.जेनिफर विंगेट की इन लेटेस्ट फोटोज में पूरा माहौल मस्ती, डांस और फैमिली बॉन्डिंग से भरा नजर आ रहा है. हर तस्वीर में शादी की खुशियां साफ झलक रही हैं. इन्हें पोस्ट करते हुए जेनिफर ने कैप्शन में अपने दोस्तों के लिए लंबा सा नोट भी शेयर किया.अपने हल्दी लुक के लिए जेनिफर ने ब्लैक वेलवेट ब्लाउज के साथ ऑलिव ग्रीन और गोल्डन शेड का लहंगा पहना. उन्होंने गले में ग्रीन स्टोन चोकर, बड़े झुमके, टीका और ब्लैक सनग्लासेस के साथ अपने लुक को स्टाइलिश ट्विस्ट दिया. उनका ट्रेडिशनल और मॉडर्न लुक फैंस का ध्यान खींच रहा है.तस्वीरों में जेनिफर कभी ढोल की थाप पर डांस करती नजर आ रही हैं तो कभी दोस्तों और परिवार के साथ जमकर मस्ती करती दिख रही हैं. हल्दी सेरेमनी की थीम पीले रंग में रंगा हुआ दिखा. ज्यादातर मेहमान येलो आउटफिट में नजर आए. हर तरफ डांस, म्यूजिक और सेलिब्रेशन का माहौल देखने को मिला।

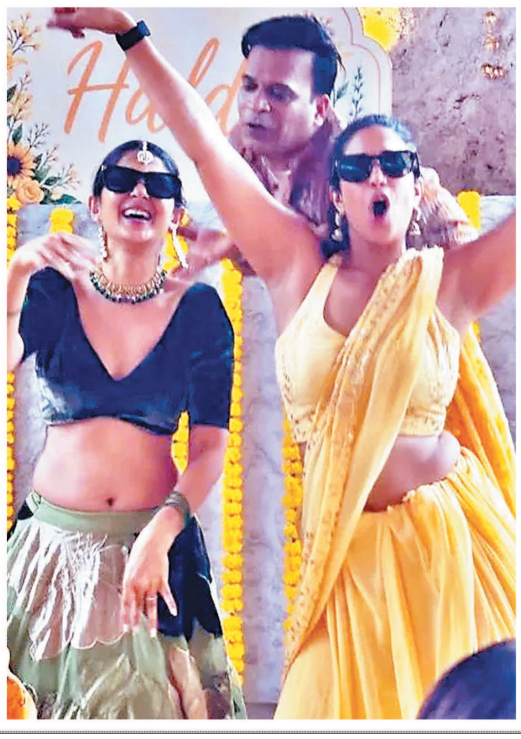

किसी कलाकार के काम को उसके निजी जीवन से जोड़ना सही नहीं : हुमा कुरैशी

यश की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'टॉक्सिक' इन दिनों अपने गाने 'तबाही' को लेकर चर्चा में है। गाने के रिलीज होने के बाद फिल्म में कियारा आडवाणी के इंटीमेट और रोमांटिक सीन्स को लेकर सोशल मीडिया पर काफी बहस शुरू हो गई है। कुछ यूजर्स ने कियारा को उनके निजी जीवन से जोड़कर ट्रोल करना शुरू कर दिया, जिस पर अब फिल्म की एक्ट्रेस हुमा कुरैशी ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कियारा का समर्थन करते हुए ट्रोलिंग को गलत और शर्मनाक बताया है। हुमा कुरैशी ने एक इंटरव्यू के दौरान कियारा आडवाणी के खिलाफ हो रही आलोचना पर बात की। उन्होंने कहा कि किसी कलाकार के काम को उसके निजी जीवन से जोड़ना सही नहीं है। हुमा ने ट्रोलर्स की सोच पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह बहुत गलत और घिनौनी बात है। उन्होंने भरोसा जताया कि फिल्म रिलीज होने के बाद इससे जुड़ी महिलाओं की मेहनत और प्रतिभा खुद जवाब देगी। हुमा ने कहा कि कई बार लोगों को समझाने या किसी चीज का बचाव करने का कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि कुछ लोगों की सोच बदलना आसान नहीं होता। उन्होंने कहा कि वह चाहती हैं कि फिल्म खुद अपनी कहानी और प्रदर्शन के जरिए लोगों तक अपनी बात पहुंचाए। हुमा के इस बयान को कियारा के समर्थन के तौर पर देखा जा रहा है। दरअसल, 'टॉक्सिक' के गाने 'तबाही' में यश और कियारा आडवाणी के बीच कुछ रोमांटिक और बोल्ड सीन्स दिखाए गए हैं। गाना रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। जहां कई लोगों ने यश और कियारा की केमिस्ट्री की तारीफ की, वहीं कुछ यूजर्स ने कियारा को निशाने पर लेना शुरू कर दिया। कुछ सोशल मीडिया यूजर्स ने कियारा के शादीशुदा होने और मां बनने के बाद ऐसे सीन्स करने पर सवाल उठाए। वहीं दूसरी तरफ लोगों ने यह भी सवाल किया कि ऐसे सीन्स के लिए केवल अभिनेत्री को ही क्यों जिम्मेदार ठहराया जाता है, जबकि अभिनेता को लेकर उतनी आलोचना नहीं होती। कई लोगों ने इसे दोहरे मापदंड का उदाहरण बताया। ट्रोलिंग का असर सिर्फ कियारा तक सीमित नहीं रहा। कुछ यूजर्स ने उनके पति और अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा को भी सोशल मीडिया पर निशाना बनाया। सिद्धार्थ की सोशल मीडिया पोस्ट पर भी कुछ लोगों ने कियारा के काम को लेकर टिप्पणियां कीं। फिल्म 'टॉक्सिक' को लेकर दर्शकों में पहले से ही काफी उत्साह है। यह एक एक्शन ड्रामा फिल्म है, जिसका निर्देशन गीतू मोहनदास कर रही हैं। फिल्म में यश मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। वहीं कियारा आडवाणी के अलावा नयनतारा, तारा सुतारिया, रुक्मिणी वसंत और हुमा कुरैशी भी अहम किरदारों में दिखाई देंगी। फिल्म की कहानी और कलाकारों को लेकर लगातार चर्चा बनी हुई है। मेकर्स ने फिल्म को बड़े स्तर पर तैयार किया है और इसे दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज करने की योजना है। फिल्म 26 अगस्त को रिलीज होने वाली है। खगोल शास्त्र कियारा आडवाणी ने इससे पहले भी कई अलग–अलग तरह के किरदार निभाए हैं और अपनी एक्टिंग से दर्शकों के बीच पहचान बनाई है। वहीं हुमा कुरैशी का बयान एक बार फिर फिल्म इंडस्ट्री में कलाकारों के काम और निजी जिंदगी को लेकर होने वाली बहस को सामने लाता है। अब सभी की नजर फिल्म 'टॉक्सिक' की रिलीज पर है। यह देखना दिलचस्प होगा कि फिल्म दर्शकों और आलोचकों के बीच कैसी प्रतिक्रिया हासिल करती है और क्या हुमा कुरैशी की बात सही साबित होती है कि फिल्म की कहानी और कलाकारों का काम ही अंतिम जवाब देगा।

अगर आप भी पुराने मोबाइल कवर्स को कबाड़ समझते हैं और उन्हें कूड़े में फेंक देते हैं, तो रुक जाएं. क्या आप जानते हैं कि यही पुराना मोबाइल कवर घर के कई छोटे-छोटे काम आसान बना सकते हैं? थोड़ी-सी क्रिएटिविटी से इन्हें दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है. इससे न सिर्फ पैसे बचेंगे, बल्कि प्लास्टिक वेस्ट भी कम होगा.

मोबाइल बदलते ही ज्यादातर लोग पुराने कवर को बेकार समझकर फेंक देते हैं. अगर मोबाइल भी ना बदलें तो बहुत से लोगों को कुछ-कुछ दिनों में मोबाइल के कवर्स बदलने की आदत होती है. आज कल बहुत से लोग तो अपने कपड़ों के कलर्स के हिसाब से मोबइल के कवर भी बदलने लगे हैं. ऐसे में घरों में बहुत सारे पुराने कवर्स इकट्ठा हो जाते हैं, जिन्हें अक्सर कबाड़ समझकर फेंक दिया जाता है.

अगर आप भी पुराने मोबाइल कवर्स को कबाड़ समझते हैं और उन्हें कूड़े में फेंक देते हैं, तो रुक जाएं. क्या आप जानते हैं कि यही पुराना मोबाइल कवर घर के कई छोटे-छोटे काम आसान बना सकते हैं? थोड़ी-सी क्रिएटिविटी से इन्हें दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है. इससे न सिर्फ पैसे बचेंगे, बल्कि प्लास्टिक वेस्ट भी कम होगा. आइए जानते हैं पुराने मोबाइल कवर को दोबारा इस्तेमाल करने के 4 आसान तरीके.

1. किचन में बनाएं स्पंज होल्डर

अगर आपके पास सिलिकॉन या रबर का पुराना मोबाइल कवर है, तो इसे किचन सिंक के पास स्पंज रखने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं. इससे स्पंज इधर-उधर नहीं रहेगा और सिंक वाला एरिया ज्यादा साफ नजर आएगा. चाहें तो इसे बाथरूम में साबुन रखने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं.

2. लगेज टैग की तरह करें इस्तेमाल

अगर आप कहीं घूमने गए हैं और आपका लगेज टैग टूटकर निकल गया है, तो ये पुराने कवर आपके बहुत काम आ सकते हैं. कवर के अंदर एक कागज पर अपना नाम, पता और मोबाइल नंबर लिखकर रखें. फिर कैमरा वाले छेद में डोरी डालकर इसे बैग या सूटकेस से बांध दें. ये मजबूत भी रहेगा और आपका सामान आसानी से पहचाना जा सकेगा.

3. छोटी-छोटी चीजें रखने के लिए बनाएं ट्रे

घर में अंगूठी, ईयररिंग, चाबी, सिक्के या पिन जैसी छोटी चीजें अक्सर इधर-उधर हो जाती हैं. पुराने मोबाइल कवर को एक छोटी ट्रे की तरह इस्तेमाल करके इन सामानों को एक जगह रखा जा सकता है. इससे चीजें खोने का डर भी कम रहेगा.

4. चार्जर और ईयरफोन रहेंगी ऑर्गेनाइज्ड

अगर चार्जिंग केबल या ईयरफोन बार-बार उलझ जाते हैं, तो पुराना मोबाइल कवर आपके काम आ सकता है. कवर में हल्के कट लगाकर उसे मोड़ें और रबर बैंड या डोरी से बांध दें. इसके अंदर चार्जर, ईयरफोन या छोटे केबल आसानी से रखे जा सकते हैं. इससे वे सुरक्षित भी रहेंगे और जरूरत पड़ने पर तुरंत मिल जाएंगे.

पुराने मोबाइल कवर को फेंकने से पहले सोचें

हर पुरानी चीज बेकार नहीं होती. थोड़ा-सा नया तरीका अपनाकर पुराने मोबाइल कवर को फिर से इस्तेमाल करने लायक बना सकते हैं. इससे घर भी ऑर्गेनाइज्ड रहेगा और पैसे की बचत भी होगी।

इन चीजों पर पैसे खर्च करने से नहीं हिचकिचाती लड़कियां कर देती हैं बटुआ खाली

ऐसा कहा जाता है कि लड़की होना काफी महंगा है, क्योंकि लड़कियों के लाइफस्टाइल पर लड़कों से ज्यादा खर्च होता है. गर्ल्स को ब्यूटीफुल और एट्रैक्टिव दिखना पसंद है, इसी गुड लुक्स की चाहत में वो लेटेस्ट ट्रेंड्स फॉलो करती हैं ताकि वो किसी से कम न लगें. आइए हम लड़कियों से जुड़ी कुछ खास बताने जा रहे हैं.

लड़कियों को रास आती है शॉपिंग

अगर आप शॉपिंग मॉल या मार्केट में जाएं, पाएंगे कि लड़कियां अपनी पसंदीदा चीजें खरीदने में काफी वक्त लगाती है, क्योंकि उन्हें अपने स्टाइल से कॉम्प्रोमाइस करना बिलकुल भी पसंद नहीं है. आखिर वो क्या चीजें हैं जिन पर गर्ल्स सबसे ज्यादा खर्च करना पसंद करती हैं.

इन 6 चीजों पर खूब पैसे खर्च करती हैं लड़कियां

1. मेकअप प्रोडक्ट्स
2. लेटेस्ट लेडीज बैग्स
3. महंगी जूलरी
4. बाहर का खाना
5. आउटफिट्स
6. फुटवियर्स

आखिर इन चीजों पर क्यों होता है ज्यादा खर्च?

आजकल सोशल मीडिया पर वीडियो और तस्वीरें पोस्ट करने का ट्रेंड है, गर्ल्स इन प्लेटफॉर्म्स पर खुद को फैशनेबल दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़तीं, इससे उनके फॉलोअर्स की संख्या भी काफी बढ़ जाती है. अच्छे रेस्टोरेंट में खाना खाना भी उनके टेंड्स का हिस्सा है.

पैसे खर्च करने के स्मार्ट तरीके

-शहरों में कई मार्केट्स ऐसे हैं जहां महंगे दिखने वाले कपड़े और फुटवियर वाजिब दामों पर मिलते हैं, इसके लिए आप ज्यादा पैसे खर्च नहीं करने होंगे.

-अगर आप बाहर जाकर रेस्टोरेंट में पार्टी करना पसंद करती हैं, तो बेहतर है कि बिल को आपस में बांट लें, ऐसा करने से किसी एक इंसान पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा.

-मेकअप पर ज्यादा पैसे खर्च करने के बजाए सिंपल लुक अपनाएं, इससे न सिर्फ आप नेचुरल बल्कि गुड लुकिंग भी दिखेंगी.

-कई त्योहारों पर ऑनलाइन शॉपिंग पर ऑफर्स आते हैं, अगर आप दोस्तों के साथ मिलकर बल्क में सामान खरीदें तो अच्छा खासा डिस्काउंड मिल जाता है।

विटामिन बी-12 की कमी को पूरा करने के लिए वेजिटेरियन खा सकते हैं ये फूड्स

शरीर को हेल्दी और एक्टिव बनाए रखने के लिए कई तरह के अहम पोषक तत्वों की जरूरत होती है. इनमें कई तरह के विटामिन, फाइबर, कैल्शियम, पोटेशियम, प्रोटीन, कार्ब्स व अन्य के नाम शामिल हैं. इन्हीं में से एक है विटामिन बी-12 जिसे हमारे शरीर के लिए बेहद उपयोगी माना जाता है. इस विटामिन से शरीर में रेड ब्लड सेल्स का निर्माण करने में मदद मिलती है. साथ ही इसे दिल और दिमाग के लिए लाभकारी माना गया है. आंखों की बेस्ट केयर के लिए डॉक्टर्स भी इस विटामिन की कमी को दूर करने की सलाह देते हैं. हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक अगर शरीर में इसकी कमी होने लगे तो कई तरह के लक्षण जैसे भूख न लगना, शरीर में कमजोरी, एनीमिया, चिड़चिड़ापन, झुनझुनी, बालों का झड़ना, कब्ज व अन्य दिखने लगते हैं.विटामिन बी 12 को कोबालामिन के नाम से भी पुकारा जाता है. देखा जाए, तो ये नॉनवेज जैसी चीजों में ज्यादा पाया जाता है, इसी कारण शाकाहारी लोगों में इसकी कमी अक्सर रहती है. हालांकि, कई ऐसे वेजिटेरियन फूड्स हैं, जिनका सेवन करके इसकी कमी पूरी की जा सकती है. हम आपको इन्हीं फूड्स के बारे में बताने जा रहे हैं.अगर आप अंडा या नॉनवेज से जुड़ी अन्य चीजें खा नहीं सकते हैं, तो इसकी जगह सोयाबीन खाएं. इसमें विटामिन बी-12 प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है. आप सोयाबीन की सब्जी, सोया मिल्क या फिर खानपान में सोयाबीन ऑयल का भी इस्तेमाल कर सकते हैं. सोयाबीन में प्रोटीन भी मौजूद होता है.

बेदाग और जवां चेहरे के लिए यूज करें नमक के पानी

अगर हम रोजाना सिर्फ सही तरीके से अपना चेहरा धोने लगें, तो आधी स्किन प्रॉब्लम्स से राहत मिल सकती है. शायद आप नमक के पानी से फेसवॉश करने के फायदे नहीं जानते हैं, वरना रोजाना अपना चेहरा धोने के लिए नमक के पानी का इस्तेमाल करते. सॉल्ट वॉटर चेहरे की चमक को बढ़ाने के साथ लंबे समय तक जवान दिखने में मदद करता है.

चेहरा धोने के लिए पानी में कैसे मिलाएं नमक : स्किन केयर के लिए आपको 4 कप पानी लेकर करीब 20 मिनट तक उबालना है. इसके बाद पानी को एक एयरटाइट कंटेनर में डालकर इसमें 2 चम्मच समुद्री यानी नॉन-आयोडिनाइज्ड नमक मिलाना है. जब नमक पूरी तरह घुल जाए, तो मिक्सचर को ठंडा होने के लिए छोड़ दें. नमक का पानी ठंडा होने पर इससे चेहरा धो लें.

नमक के पानी से फेस धोने के 4 फायदे

1. मुंहासों का इलाज : नमक का पानी नैचुरल तरीके से बैक्टीरिया का अवशोषण कर लेता है और चेहरे के रोमछिद्रों को टाइट करके तेल या गंदगी जमा होने से रोकता है. जिस कारण मुंहासों की समस्या बंद हो जाती है.

2. स्किन कंडीशन से राहत : नमक के पानी से चेहरा धोने पर एक्जिमा, सोरायसिस और अत्यधिक ड्राईनेस से छुटकारा मिलता है. क्योंकि, यह नमक पोटैशियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम से भरपूर होता है.

3. बेदाग चेहरा पाने का तरीका : नमक के पानी से फेसवॉश करना आपके चेहरे को बेदाग बना सकता है. यह एक शानदार एक्सफोलिएंट है, जो कि स्किन से डेड स्किन सेल्स को निकालकर नयी स्किन सेल्स के उत्पादन में मदद करता है.

4. चेहरा देखेगा जवान : नमक का पानी एक नैचुरल डिटॉक्सिफाइर की तरह काम करता है. यह त्वचा से हानिकारक टॉक्सिन और बैक्टीरिया को निकालकर स्किन को लंबे समय तक हेल्दी और जवान बनाए रखने में मदद करता है।

भुने हुए प्याज को खाने से मिल सकते हैं ये हेल्थ बेनिफिट्स

प्याज भले ही खाने का स्वाद दोगुना कर देता हो, लेकिन इसके कई हेल्थ बेनिफिट्स भी है. ये स्किन और हेयर केयर में भी अच्छा माना जाता है. वैसे अगर इसे भूनकर खाया जाए, तो इससे और भी हेल्थ बेनिफिट्स पाए जा सकते हैं. जानें इन स्वास्थ्य लाभों के बारे में...

हड्डियां बनाए मजबूत: भुने हुए प्याज का एक बेनिफिट ये है कि इसमें कैल्शियम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है और इसी कारण इससे हड्डियों को मजबूत रखने में मदद मिलती है. ये न सिर्फ हड्डियों को बल्कि दांतों को भी मजबूत बनाता है.

टॉक्सिन्स को करे रिमूव: आजकल लोग फास्ट फूड जैसे, चिली पोटैटो, सिंगापुरी चाऊमीन व अन्य का सेवन काफी करने लगे हैं. इसकी वजह से शरीर में विषाक्त पदार्थ जमा होने लगते हैं और इन्हें रिमूव करना जरूरी है. इसके लिए आप भुने हुए प्याज की मदद ले सकते हैं.

सूजन करे कम: शरीर में आई सूजन को कम करने के लिए आप भुने हुए प्याज को डाइट का हिस्सा बना सकते हैं. इसमें मौजूद इंफ्लामेटरी गुण सूजन की समस्या से राहत पाने में कारगर होते हैं. हालांकि, इसका अधिक सेवन करने से बचें.

पाचन तंत्र: पाचन तंत्र को हेल्दी रखने के लिए शरीर में फाइबर की मात्रा अच्छी होनी चाहिए. आप फाइबर की कमी को फील कर रहे हैं, तो भुने हुए प्याज खाएं. फाइबर की पूर्ति होने से आपको कब्ज और अपच जैसी समस्याएं तंग नहीं करेंगी।

पैरों पर सैंडल के निशान लगते हैं बुरे

घरेलू उपाय टैनिंग से पाएं छुटकारा

आपकी बॉडी को सुंदर रूप में पेश करने में पैरों का भी योगदान है. अक्सर महिलाएं फेस पर तो दिखाती हैं, लेकिन पैरों पर ध्यान नहीं देती हैं. बता दें कि स्किन की ठीक प्रकार से देखभाल में पैरों की देखभाल भी पूरी तरह से शामिल है. जिनके गहरे रंग के पैर होते हैं, तो आमतौर पर हानिकारक यूवी किरणों, गंदगी, प्रदूषण और हानिकारक रसायनों के संपर्क में आने के कारण होते हैं. पैरों की टैनिंग को दूर करना बहुत आसान से घरेलू उपाए हैं,जिनको सभी को फॉलो करना चाहिए. पैरों की टैनिंग को दूर करने के लिए जानिए कुछ घरेलू नुस्खों को जानिए-

एलोवेरा : एलोवेरा जेल कई गुणों से भरपूर होता है, इसको आप पैरों पर लगाएं. इसको करीब 20 मिनट तक पैरों पर लगा छोड़ दें. इसके बाद साफ पानी से पैर धो लें. इस प्रकिया को आप रोज अप्लाई करें. आप चाहें तो बादाम के तेल की कुछ बूंदों के साथ दो बड़े चम्मच ताजा एलोवेरा जेल को मिलाएं और इस मिश्रण से अपने पैरों पर मालिश करें और 15 मिनट बाद इसको धो लें.

संतरा : दो बड़े चम्मच संतरे के छिलके का पाउडर लें ले और इसमें दही या दूध मिलाकर कर पेस्ट बनाएं. इस पेस्ट को आप पैरों पर अप्लाई करें. फिर करीब 20 मिनट बार पैरों को धो लें.

हल्दी : आप दो चम्मच हल्दी और थोड़ा सा ठंडा दूध लेकर एक पेस्ट बनाएं. हल्दी पाउडर को ठंडे दूध में मिलाकर पेस्ट बनाएं. प्रभावित क्षेत्र में इसको अप्लाई करें और 15 मिनट बाद पैर धो लें. इसके अलावा आप एक चम्मच जैतून के तेल में दो चम्मच हल्दी पाउडर मिलाकर पैरों पर पेस्ट लगाएं. इसको लगाने के बाद 10 मिनट तक प्रतीक्षा करें और फिर इसे सामान्य पानी से धो लें.

चंदन : 1 बड़ा चम्मच चंदन पाउडर लें और इसमें थोड़ा सा गुलाब जल और एक नींबू का रस मिलाएं. फिर इस पेस्ट को 15 मिनट तक लगा रहने दें और बाद में इसे ठंडे पानी से धो लें. इसके अलावा एक बड़ा चम्मच बादाम पाउडर , चंदन पाउडर , गुलाब जल या दूध डालकर मिक्स करके यूज करें.

शहद : पैरों के प्रभावित क्षेत्रों पर आप शहद की एक परत लगाएं, इसको आप 15 मिनट तक अप्लाई करके छोड़ दें. उसके बाद पैरों को आप गुनगुने पानी से धो लें. इसके अलावा आप एक नींबू के रस में एक बड़ा चम्मच शहद मिलाएं और फिर इस मिक्सचर को को प्रभावित क्षेत्रों पर लगाएं. 15 मिनट बाद इसको हल्के गुनगुने पानी से धो लें।

घर के मेन दरवाजे या चौखट का जिंदगी पर पड़ता है कुछ ऐसा असर

> आज के समय में भले ही आप घर के हर दरवाजे पर चौखट न बनवाएं लेकिन घर की रसोई और मेन गेट पर चौखट जरूर होनी चाहिए. वास्तु में लकड़ी की चौखट को शुभ माना गया है लेकिन आप चाहें तो अपनी लाफस्टाइल के अनुसार मार्बल की चौखट भी बनवा सकते हैं. दरअसल दरवाजे के चौथे भाग को चौखट कहा जाता है. कहते हैं कि चौखट होने से घर में गंदगी और नकारात्मकता का प्रवेश नहीं होता।

वास्तु शास्त्र में घर के लिए कई नियम बताए गए हैं. कुछ नियम घर के निर्माण से भी जुड़े हुए हैं. घर के निर्माण के दौरान कौन सा कमरा (ऋष्द्व) किस दिशा में होना चाहिए. दरवाजे-खिड़की किस वस्तु से बने होने चाहिए और उसका आकार-प्रकार कैसा होना चाहिए, इन सभी बातों का जिक्र वास्तु शास्त्र में किया गया है. इतना ही नहीं, वास्तु के आधार पर घर की बनावट तब तक अधूरी मानी जाती है, जब तक चौखट या मुख्य दरवाजा सही आकार-प्रकार में न हो. आधुनिक युग में घर की बनावट में बहुत सारे बदलाव आए हैं. अब लोग अपने घरों में दहलीज या चौखट नहीं बनवाते लेकिन आपको बता दें कि चौखट के बिना घर का वास्तु अधूरा समझा जाता है. आइए जानते हैं कि वास्तु के हिसाब से घर की चौखट और मुख्य दरवाजे का क्या महत्व है और उसे कैसा होना चाहिए.

लकड़ी की चौखट को शुभ माना गया है : आज के समय में भले ही आप घर के हर दरवाजे पर चौखट न बनवाएं लेकिन घर की रसोई और मेन गेट पर चौखट जरूर होनी चाहिए. वास्तु में लकड़ी की चौखट को शुभ माना गया है लेकिन आप चाहें तो अपनी लाफस्टाइल के अनुसार मार्बल की चौखट भी बनवा सकते हैं. दरअसल दरवाजे के चौथे भाग को चौखट कहा जाता है. कहते हैं कि चौखट होने से घर में गंदगी और नकारात्मकता का प्रवेश नहीं होता. इसे और भी पवित्र बनाने के लिए

मेन गेट पर ओम और स्वास्तिक जैसे धार्मिक चिन्हों को भी लगाना चाहिए. साथ ही चौखट के बाहर रंगोली बना कर आप इसे और भी सुंदर और शुभ बना सकते हैं.

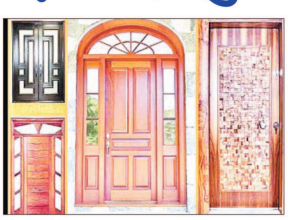

परिवार में कोई भी फूट नहीं डाल सकता : चौखट घर की सीमाओं को निर्धारित करती है. मान्यता है कि दहलीज होने से घर की सकारात्मक ऊर्जा घर से बाहर नहीं जा पाती है. वास्तु शास्त्र में इस बात का उल्लेख भी किया गया है कि अगर घर की चौखट मजबूत होती है तो परिवार में कोई भी फूट नहीं डाल सकता और न ही घर में शत्रु का प्रवेश हो सकता है. घर के बाकी कोनों की तरह चौखट की भी समय-समय पर मरम्मत करवाते रहना चाहिए. टूटी हुई चौखट को वास्तु में अशुभ माना जाता है.

चांदी का तार : मुख्य दरवाजे या मेन गेट की चौखट बनवाते समय इसके नीचे एक चांदी का तार डलवा दें. ऐसा करना वास्तु में शुभ माना जाता है. मान्यता है कि चांदी का तार डलवाने से घर का माहौल शांत बना रहता है.

2 पल्ले का दरवाजा शुभ: वैसे तो आजकल एक पल्ले के दरवाजे का फैशन है लेकिन वास्तु के हिसाब से 2 पल्ले का दरवाजा हमेशा शुभ माना गया है. खासतौर पर आपको घर के मेन डोर को दो पल्ले का ही बनवाना चाहिए. दरअसल एक पल्ले के दरवाजे के लिए चौखट की जरूरत आमतौर पर नहीं होती है, मगर दो पल्ले का दरवाजा बिना चौखट के अधूरा होता है.

दहलीज पर बैठकर कुछ खाएं नहीं : कोशिश करें कि जब भी घर की दहलीज को पार करें या फिर घर की दहलीज के अंदर घुसें तो उसे नमस्कार करें. कभी भी घर की दहलीज पर बैठकर कुछ खाएं नहीं और दहलीज पर पैर पटकें. इसे अशुभ माना गया है. दहलीज के सामने कभी भी कूड़ा या गंदगी नहीं पड़े रहने दें. ऐसा होने से देवी लक्ष्मी घर में प्रवेश नहीं करती हैं।

पुलगांव में कार का शीशा तोड़कर 4.90 लाख चोरी करने वाला गिरोह गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग।

पोटिया रोड स्थित उत्सव होंडा शोरूम के सामने कार का शीशा तोड़कर ?4.90 लाख नगद चोरी करने वाले सुनियोजित गिरोह का एसीसीयू और थाना पुलगांव पुलिस ने पर्दाफाश कर दिया है। मामले में 05 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। दिनांक 28.जुलाई को प्रार्थी प्रमोद महेश्वरी निवासी मुक्त नगर, दुर्ग अपनी मारुति स्विफ्ट कार 07 डफ7983 में लगभग 4,90,000 नगद एक बैग में रखकर उत्सव होंडा शोरूम के सामने वाहन खड़ा कर गए थे। वापस आने पर अज्ञात बदमाशों ने कार का बाएं सामने का शीशा पत्थर से तोड़कर नगदी से भरा बैग पार कर लिया था। मामले में थाना पुलगांव में अपराध क्रमांक 680/2026 धारा 301(1), 324(4) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज किया गया था।

ऐसे हुआ खुलासा

प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए एसीयू और पुलगांव पुलिस की संयुक्त टीम बनाई गई। पुलिस ने प्रार्थी के निवास से घटनास्थल तक 5 किमी क्षेत्र में लगे सैकड़ों सीसीटीवी फुटेज खंगाले। तकनीकी विश्लेषण, मुखबिर सूचना और संदिग्धों की गतिविधियों के आधार पर जांच आगे बढ़ी।

जांच में मुख्य आरोपी भुवनेश्वर डहरिया, 23 वर्ष का नाम सामने आया, जो उत्सव होंडा शोरूम में कमचारी है। पूछताछ में पता चला कि उसकी सहकर्मी सपना राजपूत के जरिए उसे प्रार्थी की गतिविधियों की जानकारी मिलती थी। आरोपी ने पहले रैकी कर यह पता किया था कि प्रार्थी अक्सर बड़ी नगदी लेकर इसी स्थान पर वाहन खड़ा करता है। इसी योजना के तहत उसने अपने साथियों के साथ वारदात को अंजाम दिया।

आरोपियों की निशानदेही पर चोरी की राशि में से ?1,57,000 नगद बरामद किया गया। साथ ही घटना में प्रयुक्त 02 पल्सर मोटरसाइकिल और 01 एक्टिवा स्कूटी भी जप्त की गई। शेष राशि और अन्य आपराधिक गतिविधियों को लेकर विवेचना जारी है।

आरोपियों ने प्रार्थी की दिनचर्या की रैकी की। मौका पाकर कार का शीशा तोड़ा और नगदी लेकर अलग-अलग दोपहिया वाहनों से फरार हो गए। उद्देश्य बड़ी नगदी चोरी कर अवैध आर्थिक लाभ कमाना था। दुर्ग पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि बड़ी नगदी लेकर चलते समय विशेष सतकर्ता बरतें और वाहन में नगदी या कीमती सामान न छोड़ें। किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें। संपत्ति संबंधी अपराधों पर कठोर कारवाई जारी रहेगी।

प्रदेशभर में शुरू हुआ विश्व स्तनपान सप्ताह, पहले घंटे और पहले 6 माह तक स्तनपान पर जोर

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर।

हर नवजात को स्वस्थ और सुरक्षित जीवन की शुरुआत मिले, इसी उद्देश्य से प्रदेशभर में विश्व स्तनपान सप्ताह की शुरुआत हो गई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा 1 से 7 अगस्त तक अस्पतालों, सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों तथा समुदाय स्तर पर विविध जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

अभियान के तहत माताओं, गर्भवती महिलाओं और उनके परिजनों को स्तनपान के महत्व और उसके वैज्ञानिक लाभों की जानकारी दी जा रही है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार जन्म के पहले घंटे के भीतर स्तनपान शुरू करना और पहले छह माह तक केवल मां का दूध पिलाना शिशु के स्वस्थ विकास की सबसे मजबूत नींव है। मां का पहला गाढ़ा पीला दूध यानी कोलोस्ट्रम शिशु के लिए प्राकृतिक सुरक्षा कवच की तरह काम करता है। यह संक्रमण से बचाव, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और कुपोषण के जोखिम को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विशेषज्ञों ने छह माह बाद उम्र के अनुरूप ऊपरी आहार के साथ 2 वर्ष या उससे अधिक समय तक स्तनपान जारी रखने की सलाह भी दी है। स्तनपान केवल शिशु के लिए ही नहीं, मां के स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। इससे प्रसव के बाद मां के स्वास्थ्य में तेजी से सुधार होता है, कुछ गंभीर बीमारियों का खतरा कम होता है और मां-शिशु के बीच भावनात्मक संबंध मजबूत बनते हैं। सप्ताहभर गर्भवती एवं धात्री माताओं की काउंसलिंग, समूह चर्चा, स्वास्थ्य शिक्षा सत्र, प्रश्नोत्तर कार्यक्रम और स्तनपान की सही तकनीक पर व्यवहारिक मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

45 लाख की 5480 लीटर अवैध शराब का किया नष्टीकरण

नई दृष्टिबिंदु /दुर्ग

दुर्ग जिले में अवैध शराब के खिलाफ बड़ी कारवाई करते हुए पुलिस ने *?45 लाख की अनुमानित कीमत की 5480.082 बल्क लीटर अवैध शराब* का विधिवत नष्टीकरण किया। यह शराब आबकारी अधिनियम के 112 प्रकरणों में जप्त की गई थी और मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त पाई गई थी। नष्टीकरण की कारवाई 04 अगस्त 2026* को *थाना जामुल परिसर* में कलेक्टर द्वारा गठित नष्टीकरण समिति की उपस्थिति में संपन्न हुई। पुलिस के अनुसार थानों में लंबे समय से रखी इस अवैध शराब से निकलने वाली बदबू के कारण थाने आने वाले आमजनों को भारी परेशानी हो रही थी। न्यायालयीन प्रक्रिया पूर्ण होने के बाद इसे सुरक्षित तरीके से नष्ट करने का निर्णय लिया गया।

कलेक्टर महोदय द्वारा गठित समिति के समक्ष जप्त मदिरा को प्रस्तुत कर परीक्षण एवं अनुमोदन के बाद वैज्ञानिक एवं सुरक्षित प्रक्रिया से नष्ट किया गया। इस दौरान नगर पुलिस अधीक्षक छावनी, थाना प्रभारी जामुल, नायब तहसीलदार, आबकारी उपनिरीक्षक सहित पुलिस और आबकारी विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। पूरी कारवाई पारदर्शिता और सुरक्षा मानकों का पालन करते हुए की गई। दुर्ग पुलिस का कहना है कि इस कारवाई का उद्देश्य न्यायालयीन आदेशों का प्रभावी पालन सुनिश्चित करना, जप्त सामग्री का सुरक्षित निस्तारण करना और उक्त शराब के पुनः अवैध उपयोग की किसी भी संभावना को समाप्त करना है।

GOSWWAMI
FLEX PRINTING
ADVERTIZER
भिलाई में सबसे सस्ता, सबसे अच्छा
Hoardings Flex Banner Vinyl Printing
One Way Vision Glow Sign Board
93290-13334, 74711-15735
goswamiflex@gmail.com
Address - 3rd Floor Shop No-1, Arora Tower, M.C. Market

अर्चना
फ्लाई ऐश ब्रिक्स
निर्माता एवं विक्रेता
हैवी इंडस्ट्रीयल एरिया, भिलाई
8 इंच एवं 9 इंच में उपलब्ध है।
संपर्क करें
9329960605, 9827160605, 9098639991

Baked by Suhani
Premium Homemade Cakes & Desserts
Birthday Cakes
Anniversary Cakes
Custom Theme Cakes
Serving Bhilai & Durg
baked.by.suhani
Suhani Singh
Premium Homemade Cakes & Desserts
Serving Bhilai & Durg
DM for Order
Followed by _s_andeep
Follow
Message
Order Now:
@baked.by.suhani
M0.6263734520

10वीं, 12वीं, स्नातक एवं स्नातकोत्तर पास छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य के लिए
फायर एवं सेफ्टी प्रशिक्षण
नौकरी में सहायक
प्रवेश प्रारंभ सत्र 2026-2027
निजी कंपनियां जैसे पावर प्लांट, सीमेंट प्लांट, स्टील प्लांट, कंस्ट्रक्शन सेक्टर में बहुत नौकरियाँ मिलती है।
प्रशिक्षण शुल्क में विशेष छूट
सरकारी मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र दिया जाएगा
फायर एवं सेफ्टी प्रशिक्षण में प्रवेश प्रारंभ

क्र.	पाठ्यक्रम का नाम	क्र.	पाठ्यक्रम का नाम
1.	फायर टेक्नोलॉजी एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	5.	पी. जी. कोर्स व्यावसायिक सेफ्टी, स्वास्थ्य व पर्यावरण मैनेजमेंट सिस्टम
2.	इंडस्ट्रियल सेफ्टी / पी. जी. इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6.	हैल्थ सेनेटरी इंस्पेक्टर
3.	बी.एस.सी. इन फायर सेफ्टी	7.	सब- फायर ऑफिसर
4.	पी. जी. कोर्स फायर एवं इंडस्ट्रियल सेफ्टी	8.	सर्टिफिकेट इन फायरमैन-इंडस्ट्रियल सेफ्टी

(An Authorized Training Centre of AEERO)
फायर सेफ्टी एवं डिजास्टर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट
(मान्यता प्राप्त निजी प्रशिक्षण संस्थान)
कैंपस :- इंदिरा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल, सुपेला, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़
ADMISSION HELPLINE: 7697212782

BA
BCA
BCom
BBA
BSc
PGDCA
MSc CHEMISTRY
MSc BIOTECHNOLOGY
MSc BOTANY
MSc ZOOLOGY
MSc COMPUTER Sc
MSc MATHS
MA ENGLISH
MCom
BLib
MLib
DCA
MA CHHATTISGARHI
Affiliated to Hemchand Yadav University, Durg
SAI COLLEGE
Street-69, Sector-6, Bhilai
70248 86996
99770 01027
Deepak Advertisers

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100